'क्यों इस देह का मान करे'

क्यों इस देह का मान करे, यह तव चरणन् की धूल।
मिथ्या सराहना मत करियो, मैं पथ न जाऊँ भूल।।

मिट्टी का अभिमान करे, अनित्य शव चाकरी करे।
ज्ञान दृष्टि से देख इसे, क्यों भ्रम में तू फिरे।।

क्यों इस देह का मान करे, यह जल्द ही धूलि बने।
मम राखी तव राखी मिले, कौन किसे फिर बड़ा कहे।।

राम चरण का पथिक हूँ मैं, अब दर्शन की है प्यास।
धूलि बन वा चरण चढ़ूँ, यही है अंतिम आस।।

सामग्री तो यह स्वाभाविक है, श्रेय पथ सुगन्धि बने।
राम रंग में रंगी हो पूर्ण, जब अर्पित होने चले।।...

- परम पूज्य माँ

(प्रार्थना शास्त्र १, न. २४ - २०.१.१९५९)

अनुक्रमणिका

३. 'आप जिस विलक्षण व दिव्य जीवन के साथ जुड़े हुये थे...'
श्रीमती पम्मी महता

११. 'एक वो ही थीं, जो हमें बड़ी माँ की पहचान समझा सकीं!'
डॉ. राहुल गुप्ता

१४. 'आपकी यादों की अमूल्य निधि, आजीवन हमारे साथ रहेगी...'
डॉ. राज गुप्ता

१५. '...गर नाम रंगी मन भये, कर्म भी छू नहीं पायें।'
अर्पणा प्रकाशन 'जपुजी साहिब' में से

२२. 'मेरे जीवन को सुंदरता से भरने के लिए मैं उनकी आजीवन ऋणी रहूँगी...'
डॉ. इला आनन्द

२६. '...प्रेम सच्चा हो तो, प्रेमास्पद के गुण प्रेमी में आ ही जाते हैं!'
अर्पणा प्रकाशन 'श्रीमद्भगवद्गीता - भगवद् बाँसुरी में जीवन धुन' में से

३१. '...उन मूल्यों को हम अपने जीवन में कभी क्षीण नहीं होने देंगे!'
श्रीमती अन्नु कपूर

३२. पूज्य छोटे माँ की याद में श्रद्धासुमन

३७. अर्पणा समाचार पत्र

सम्पादक की ओर से

गद्य में प्रस्तुत सभी लेख साधकों के प्रश्नों के उत्तर में परम पूज्य माँ द्वारा प्राप्त सत्संगों पर आधारित हैं और संकलन-कर्ता की निजी समझ के अनुकूल हैं। काव्य की पंक्तियाँ पूज्य माँ के मुखारविंद से प्रवाहित दिव्य प्रवाह का अंश हैं; जिसे सुश्री छोटे माँ ने लेखनी बद्ध किया है। अपनी पूर्ण सामर्थ्य के अनुसार उसे ज्यों का त्यों प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुति में किसी भूल के लिये हम क्षमा प्रार्थी हैं।

सम्पादक : *पूनम मलिक*
सह सम्पादक : *श्रीमती साधना पाल*

पता : अर्पणा आश्रम, मधुबन, करनाल
१३२ ०३७, हरियाणा, भारत

श्री हरीश्वर दयाल, अर्पणा ट्रस्ट, मधुबन, करनाल १३२ ०३७ ०१, हरियाणा द्वारा जून २०१५ को प्रकाशित तथा सोना प्रिन्टर प्राईवेट लिमिटेड, एफ -८६/१, ओखला इण्डस्ट्रियल एरिया फेज़-I, नई दिल्ली ११० ०२० द्वारा मुद्रित

‘आप जिस विलक्षण व दिव्य जीवन के साथ जुड़े हुये थे, उनके जीवन को लेखनीबद्ध करना आपके लिए गौरव की बात थी!’

श्रीमती पम्मी महता

परम पूज्य माँ के साथ श्रीमती पम्मी महता

परम पूज्य श्री हरि माँ से प्रथम मिलन की यात्रा का जब उन्हीं की कृपा से आग़ाज़ हुआ था, तभी महसूस हुआ था मुझे कि भगवान जी स्वयं ही प्रेरित करते हैं... बड़ी ही ख़ामोशी से आंतर में दस्तक दे कर व आवाज़ देकर बुला लेते हैं! मैं बड़ी हैरतज़दा थी कि आप माँ कौन हैं मेरे, जो मुझे प्रेरित करी अपने पास बुला लिया और जिज्ञासा भर दी कि मैं जानूँ तो सही आप हैं कौन!

मैंने निश्चय किया कि बच्चों को छुट्टियाँ हो गई हैं - 'इसलिए चल मना २१ दिन के लिए मधुबन चल!' आप तभी, सभी के साथ धारवाड़ से लौटे ही थे। मिलने की चाहत ने आंतर में वेग पकड़ लिया... पूज्य बाबा सर (डॉ.जे.के.महता) का बहुत आदर करती थी और अपने इस परिवार को मिलने की बहुत ही उत्सुकता थी। यह भी जिज्ञासा थी कि जानूँ तो सही आप माँ क्या शै हैं, जिनके पीछे पूज्य बाबा सर सपरिवार चले गये हैं! आप परम पूज्य श्री हरि माँ के प्रति कितने भ्रम पाले हुये थे... क्योंकि आप क्या हैं, कैसी हैं, यह तो जानती ही नहीं थी! जो सुना-सुनाया था वही सत्य है, यह भी मन मानता नहीं था। मेरी तुला बहुत ही फ़र्क़ थी। इसी उलझन की सत्यता जान पाऊँ, शायद इसीलिए आपने मुझे आवाज़ देकर बुला लिया!

वह २१ दिन का घनिष्ठ सम्बन्ध था, जब इन भव्य विभूति श्री हरि परम पूज्य माँ को बहुत ही क़रीब से देखने का अवसर आप माँ ने मुझे दिया। जैसे ही मैं पहुँची आप के कमरे में, तो आपने कहा, "कैसे आई हो?" मैंने कहा, 'आपको देखने आई हूँ।' आपने मुसकरा कर कहा, "किस द्रदृझ्ड्ढ में बैठूँ?" सहज ही मेरे मुँह से निकला, 'आपको हर pose में देखने आई हूँ!'

मेरे बच्चों की ज़िम्मेवारी उनकी बहनों ने सम्भाल ली। बस उनके खाने पीने के समय ही उन्हें मिलती। बच्चे बहुत छोटे थे और बहनें भी खूब लाड़ लड़ाने वाली थीं। सभी आपस में बहुत ही प्यार के रिश्ते में बंध गए थे!

परम पूज्य माँ, आप ने मुझे परछाईं की ही तरह अपने संग रखना शुरु किया! आप उठते तो मैं उठती, आप चलते तो मैं चलती, आप खाते तो मैं खाती! आप किस तरह सभी के कामों में संलग्न हो जातीं जैसे अपने ही काम कर रही हों। अद्‌भुत, अतीव अद्‌भुत लगता आपका कर्मनिष्ठ होकर सब करते हुए!

मैं कोई प्रश्न नहीं करती थी। बस आप ही आपको व आपके हर action को observe करती। आप किस व्यक्तित्व की हैं, देख कर आश्चर्य होता। मगर मन गद्‌गद् हो उठता! वाह, यह भी क्या जीना है... जहाँ अपनी याद ही नहीं, दूसरा ही जैसे अपना आप बना आपके सामने खड़ा है! आप हर detail में सभी पूछतीं और paperwork करतीं जब तक कि उनकी समस्या का हल सामने न आ जाता।

जो आता, उसकी परेशानी का हल उसके सामने रख देते तो उसका चेहरा खिल उठता जैसे उसे अनमोल ख़ज़ाना मिल गया हो। यूँ परम पूज्य माँ का प्यार व आशीर्वाद मिल जाने पर धन्य धन्य महसूस करता हुआ, शुक्र-शुक्र करते हुये, शुक्रिया अदा करता हुआ चला जाता। आप उसे बिलकुल चिन्तामुक्त करके विदा करते जैसे उसके सारे दुःख अपनी झोली में डाल लिए हों और सुख की थपकी दे दी हो!

इस तरह आप में विश्वास व कुछ कण श्रद्धा के बटोर कर चला जाता। आप सभी के लिए यूँ ही निरन्तर करते ही चले जाते। कब सहर उगी और कब शब में ढल गई, पता ही न चलता। आपका दिव्य प्रसाद सभी को निरन्तर मिल रहा होता और सभी अपने आँसू भूलकर मंद-मंद मुसकुराते हुए चले जाते। आपका किया हर कर्म बहुत ही स्थाई रूप से मेरे आंतर में बहुत गहरे में जा अंकित हो जाता। आप पूज्य श्री हरि माँ के प्रति सीस झुक जाता और नतश्री बारम्बार होई मन ही मन प्रणाम भी कर लेती!

एक बार आपकी व्यस्तता की पराकाष्ठा देखी... आप माँ, कौशल्या माता जी (श्रीमती शीला कपूर के माता जी) के accounts देख रहे थे। आपने निरन्तर ७२ घण्टे दिन-रात जाग कर उनका काम कर दिया। मेरे भाग्य अच्छे थे जो मैं इस सभी की witness थी। यहाँ कुछ भी ऐसा नहीं था जिसे झुठलाया जा सके! संशय उठाया जा सके! मन ही मन वाह वाह करती, कैसे सुन्दर जीवन-दर्शन हो रहे हैं! भगवान की कृपा से कृतज्ञता का भाव पनप उठा। आंतर में जो भी उतर रहा था, एक अद्‌भुत विलक्षण जीवन-दर्शन थे। वह अतीत नहीं बना कभी भी! वह आज भी उतना ही वर्तमान है जितना उस रोज़ था...

अनुभवी का ज्ञान, विज्ञान एक ही जीवन के दो पहलू हैं। धन्य भाग्य मेरे जो मेरा जीवन आप श्री हरि माँ में सुरक्षित हो गया। १९६५ से लेकर आज तलक आप मेरे अंग-संग ही रहे हैं! आप श्री हरि माँ का कोटि कोटि धन्यवाद! लगता था, वियोग के दिन मिलन में परिणत हो रहे हैं... क्योंकि आप श्री हरि माँ ने मिलन के तबस्सुम ही मेरे जीवन में खिलाने शुरू कर दिये! आप अनन्त की तरह, आपकी अनन्त रहगुज़र जो आपने क़दम-ब-क़दम बनाई है हम उसी रहगुज़र पर निरन्तर चलते ही चलें, जो इक रोज़ जा आप ही में विलीन हो पायें... हरि ओ॑म्!

आपकी यह पृष्ठभूमि अनिवार्य थी लेखनीबद्ध करनी। हे श्री हरि माँ, इसके पश्चात् ही आपने आगे का पथ मेरे लिए खोला... आप माँ ने कहा, "पम्मी जाओ, 'पूज्य छोटे माँ' के चरणों में बैठो, वही मेरे बारे में तुझसे विस्तार से कहेंगे।" इस प्रकार आपने मेरे अवगुण

मन्दिर में परम पूज्य माँ, छोटे माँ, श्रीमती पम्मी महता एवं अन्य सदस्य...

दरकिनार कर के मुझे पूज्य छोटे माँ के हवाले कर दिया। आप सद्गुरु प्रभु माँ ने मुझे गुरु चरणन् में बिठा दिया। पूज्य छोटे माँ साक्षी थे आपके जीवन के! आप छोटे माँ के हृदय सों दूसरे के मंगल ही मंगल की कामना करते व सभी को आशीर्वाद देते - मैं भी इसी पंक्ति में खड़ी कर दी गई।

मन्दिर में हम छोटे माँ के साथ सभी मिलकर वह भजन गाते जो परम पूज्य श्री हरि माँ ने गा-गा कर अपने प्रभु राम के श्री चरणन् में धरे थे! कैसा अद्भुत व सुन्दर प्यार था आप माँ का! अपने इष्ट के प्रति जो प्रवाह रूप में बहना शुरु हुआ तो बहता ही चला गया! कितनी लग्न की अग्न थी आप परम पूज्य माँ के हृदय में जो लड़ियों की तरह बहती ही चली गई आपके हृदय से।

इस प्रवाह को आप छोटे माँ ने लेखनीबद्ध करना शुरु किया; फिर आपके हाथ रुके ही नहीं कहीं भी, कभी भी! आप भी परम पूज्य माँ की धरोहर उन्हीं के चरणन् समर्पित करती जातीं व प्रश्न पूछ पूछ कर माँ से समाधान भी पा जातीं। हम सभी जो मन्दिर में सुबह शाम बैठते, बड़े ही जिज्ञासापूर्ण मन से सुनते भी और लिखते भी जाते। आप परम पूज्य माँ के हृदय से निसृत हुई इस वाणी को मंत्र-मुग्ध सी हुई, सभी निहारती जातीं व लिखती भी जातीं। इस तरह सारी इन्द्रियाँ वहीं केन्द्रित हो जातीं। छोटे माँ, आप फिर मुझे अपने कमरे में ले जाते। माँ मन्दिर में जो भी कहते थे, आप मुझे समझा देते। इस तरह एक अनुभवी की

जीवन-गाथा का अवलोकन होता! हम जितने भी मन्दिर में होते सभी लिखते भी और प्रश्न भी करते जाते। माँ के पास हर प्रश्न का उत्तर होता, जो सहज ही प्रवाहित हो जाता।

आप परम पूज्य श्री हरि माँ इतने विस्तार से कभी गा कर और कभी साधारण वाणी में कही-कही सभी को सुनने व समझने का अवसर देते। कभी ज्ञान से और कभी प्रेम से व कभी अपने ही जीवन का example देकर समझाते। मुझे ज्ञान बोझिल लगता, इसलिए लिखती रहती। मगर प्रेम की भाषा आप माँ की वाणी से निसृत होती तो वह प्रेम के बोल रफ़्ता-रफ़्ता आंतर में घर करने लगे। इस तरह छोटे माँ मन्दिर से उठने के बाद अपने कमरे में मुझे, रेवा भंडारी व लव (विवेक कपूर) को बुला लेते।

माना कि मुझे ज्ञान समझ नहीं आता था। ऐसे ज्ञान को कभी सुना जो नहीं था! परन्तु धीरे-धीरे बड़ा ही दिलचस्प लगने लगा। मुझे बहुत ही कम समय मिलता, अपनी घर-गृहस्थी छोड़ कर मधुबन आने के लिए। लेकिन फिर भी दो-तीन दिन निकाल ही लेती। इतने थोड़े समय की भरपाई आप पूज्य माँ व छोटे माँ मिलकर सारे दिन में १६,१७ घण्टे मुझे देकर कर ही देते। अपना आभार व कृतज्ञता प्रकट करती और चली आती वापिस... कितना समय उन तीन दिनों में मिल जाता मुझे आप दोनों की करुण कृपा से! इसी तरह इन मिले पलों का इतना विस्तार हो जाता कि पलों के बीतने का पता ही न चलता। बहुत अच्छा लगता यहाँ आ कर! जीवन जीने का अंदाज़ ही इतना सुन्दर था कि बहुत ही आकर्षित कर लेता मुझे और चित्त यहीं टिक जाता। जब वापिस जाती तो सभी मुझे करनाल स्टेशन पर छोड़ने आते। उनमें सर्वप्रथम परम पूज्य माँ होते, पूज्य छोटे माँ, पूज्य बाबा सर व भाभी जी तथा बच्चे होते! जब भी विदा होती सभी के प्यार को पाकर, तभी वापिस आने की ललक लग जाती...

माँ का यह जीने का अंदाज़ व उनकी हर अदा बहुत ही दिलचस्प व लुभावनी लगती। बहुत ही सरल व सादगी का जीवन हो कर भी बहुत ही अनूठा लगता! कितना आकर्षण होता! आप छोटे माँ भी बड़े ही प्यार से व बड़ी ही सरल भाषा में समझाते। ज्ञान जब मेरे लिए बोझिल बन जाता, छोटे माँ आप समझ जाते और झटपट पूज्य माँ के जीवन की मीठी-मीठी यादों में उतार लाते। सभी अनुभव बड़े ही दिल को लुभाने वाले होते। कैसे आप परम पूज्य माँ की जीवन झाँकी को रूबरू हमें दर्शाते और ऐसे लगता कि साक्षात्कार हो रहा है।

पूज्य छोटे माँ के परम पूज्य माँ के साथ बिताये वह सभी पल उनकी दास्तां बताते हैं। कैसे कैसे छोटे माँ को निःस्वार्थता का पाठ पढ़ाया। आप माँ, छोटे माँ को डपटते भी थे आगे ले जाने के लिए; मगर शाम को उन्हें मना भी लेते, रिझा भी लेते... जब तक उनकी मनःस्थिति सहज न हो जाती!

परम पूज्य माँ का जब भक्ति प्रवाह अपने राम जी के प्रति निरन्तर गायन प्रवाह में बहने लगा, तो वह छोटे माँ ही थे जो उसे लेखनीबद्ध कर रहे थे! सच ही, आप छोटे माँ के पास लेख सिद्धि थी! वरना यह सभी लिखना साधारण जीव के लिए असम्भव ही नहीं, नामुमकिन भी था। छोटे माँ ने इसका गुमान भी नहीं लिया कभी, क्योंकि आप जिस विलक्षण व दिव्य

जीवन के साथ जुड़े हुये थे उनके जीवन को लेखनीबद्ध करना आपके लिए गौरव की बात भी थी और परम पूज्य माँ का आशीर्वाद भी था। उन्हीं की कृपा से यह परम सौभाग्य आपको मिला। उन्हीं का दिया प्रसाद आपने बाँटना शुरु किया। सत्संगों राही सभी के आंतर में परम पूज्य माँ की छवि व जीवन को स्थापित किया... उसका मूल्यांकन जो भी जीवन में कर पायेगा, छोटे माँ आपका कृतज्ञ व अनुगृहीत हो जायेगा! भगवान जी की अपरम्पार महिमा का परम सौभाग्य व वरदान आपको मिला!!

साख्य भाव में... पूज्य छोटे माँ के साथ श्रीमती पम्मी महता

धन्य धन्य हुई ईश कृपा से! माँ, पहले तो आपने मुझे शिष्य बना कर छोटे माँ के आगे पेश किया; फिर सद्गुरु ने हम दोनों को सखियाँ भी बना दिया जो अपने दिल की बातें आपसे कर पाऊँ! आपसे समाधान भी माँग लूँ। अगर कहूँ, सत्य पर आधारित सखियाँ बन गई हम! मैंने कभी भी उन्हें गुरु न मानने की भूल नहीं की। कभी भी हम सखियों ने गुरु और शिष्य के रिश्ते का उल्लघंन नहीं किया। जो भी सीखा अपने गुरु से सीखा, सद्गुरु परम पूज्य माँ की छत्रछाया में! सखियाँ बनी तो दिल के राज़ बाँटें। प्यारी प्यारी यादें बाँटी! खट्टे मीठे अनुभव भी बाँटे... जिनको हमने कभी किसी और के आगे पेश ही नहीं किया, जीवन भर!

ऐसी ही प्यारी दोस्ती थी हमारी! विश्वास व आस्था की नींव पे खड़ी थी यह दोस्ती! बहुत ही प्यारा रिश्ता था हमारा। जब परम पूज्य माँ के बारे में चर्चा होती या उनके जीवन-ज्ञान के सार की बात आती तो गम्भीरता की चादर ओढ़ कर व एकाग्रचित हो कर उसे ग्रहण करती। कहीं कुछ छूट न जाये... कोई संशय होता तो आप छोटे माँ से फिर से पूछ लेती और आप प्यार से बता भी देतीं। यह बात मैं पहले भी कह चुकी हूँ कि गुरु शिष्य का वार्तालाप बहुत भिन्न था और दोस्ती का बिलकुल ही अलग! ईश कृपा इतनी रही कि दोनों ही पहलुओं

को आप परम पूज्य माँ का आशीर्वाद मिला हुआ था, इस लिए पूज्य छोटे माँ की शान में कोई गुस्ताख़ी नहीं हुई। यह प्यार का बंधन था, प्यार में ही सीमित रहा।

इस तरह हम मिलते रहे, बिछुड़ते रहे। मेरी घर-गृहस्थी जालन्धर में है। डलहौज़ी जाते समय परम पूज्य श्री हरि माँ व कुछ बंधु-बांधव एवं जो भी उनके साथ होते, चाहे कुछ पल के लिए ही रुकते, मगर रुकते ज़रूर! मुझे भी उनसे मिलने की तड़प तो हमेशा ही लगी रहती थी व साथ में छोटे माँ व बाक़ियों से भी मेल हो जाता। वह पल बड़े ही ख़ुशगवार होकर गुज़रते।

पूज्य छोटे माँ और मैं आपस में पतिया भी लिखते। आप मुझे माँ के अनुभवों को लिखतीं और मैं सखी के नाते साख्य भाव में लिखती। शुभ कामनायें, शुभ मुबारिकें भी exchange करतीं। phone पे भी बातचीत होती। मन्दिर में सुबह का जो सत्संग होता, उसका निचोड़ मुझे बता देतीं और इस तरह मुझे चिन्तन-मनन करने का अवसर मिल जाता। इस तरह निरन्तर आगे से आगे माँ को जानने की ऐसी ललक लग गई कि जिज्ञासा होती कुछ और जानूँ! ऊपर से आप छोटे माँ मुझे बताने को तत्पर रहते। इसलिए जो भी प्रसाद मिलता, मैं बड़े ही प्यार से ग्रहण करती। क्योंकि गुरु ही तो है जो सद्गुरु की महिमा शुद्ध रूप में गा सकता है!

सभी की मंगलकामना करने में ही आपकी शुभकामनायें व आशीर्वाद आपके लिए भी सुखदाई व मंगलमय हो जाते हैं! इस बिमारी में भी, आप पूज्य छोटे माँ का सभी का मुसकुरा कर स्वागत करना व हाथ उठा कर आशीर्वाद देना यही इंगित करता था। आपका निःस्वार्थ व निश्चल प्रेम ही था जो सभी को इसी भाव में मिल रहा था - अपना पराया तो था ही नहीं वहाँ कोई भी! मुझे ऐसा लगता था कि परम पूज्य श्री हरि माँ का अलौकिक प्रेम आपके आंतर से सभी के लिए प्रवाहित हो रहा था। आप को छोटे माँ, शारीरिक पीड़ायें बहुत थीं मगर आप सभी से ऊपर उठ चुकी थीं। ऐसा लगता था, आपके शरीर की पीड़ाओं का, परम पूज्य श्री हरि माँ करुण कृपा करी निवारण कर रहे थे। जैसे इस जन्म में सारी पीड़ाओं को समाप्त करी अपने लोक में ले जा रहे हों!

कभी लगता आपकी मुसकुराहट ही सभी के प्रति अपना आभार व्यक्त कर रही हो! यह सब महसूस करते हुये अपने आंतर में, अपने ही भावों के ताने-बाने बुनती जाती और आपका हर पल शुक्रिया अदा करती जाती। कुछ भी तो उलझा हुआ नहीं था। आपके जीवन की झाँकियाँ व परम पूज्य माँ के प्रति आपका समर्पण बहुत ही विलक्षण व अद्भुत लगता, यूँ ही हृदय में यह सभी धर लेती।

अपने को बहुत ही भाग्यशाली मानती हूँ, जो इस धरा पर अवतरित हुये परम पूज्य माँ व आप पूज्य छोटे माँ के जीवनों का हिस्सा बन सकी। आपके दिव्य दर्शनों, आप दोनों से सीखा जीवन जीने का राज़; जिसे आप माँ व आप छोटे माँ ने अपनी अपनी मुहब्बत में इस कनीज़ को भी इतना दिया कि जन्म जन्म के लिए हृदय दामन भर दिया! धन्य धन्य हो गई

पूज्य छोटे माँ के साथ श्रीमती पम्पी महता एवं उनका परिवार

मैं! ख़ुदा करे इसी तरह सदा के लिए भरा रहे यह हृदय, जो निरन्तर बाँटने का अवसर मुझे भी मिला रहे! धन्य धन्य महसूस कर रही हूँ क्योंकि यह दिव्य प्रसाद बहुत ही विलक्षण व अनूठा है।

बहुत बार कह चुकी हूँ, मगर आज भी इसे अवश्य कहूँगी... मेरे जीवन को आप दोनों का आशीर्वाद, प्रसाद व आप से जीवन जीने की राह मिली है - जिसे कभी भी झुठलाया नहीं जा सकता। आप चले गये हैं शरीर रूप में, मगर इस हृदय में मूर्तिमान हो गए हैं - जिसे बयान करके भी कर ही नहीं पाती!

गुरु गोबिन्द दोऊ खड़े, काके लागूँ पायें
बलिहारी गुरु आपनों, जिन गोबिन्द दियो बताये

आपके प्रति श्रद्धा, आस्था व विनीत नमन देते हुये बार बार नमन करती हूँ व अतीव धन्यवाद करती हूँ –

कौन गुण गाऊँ मैं -

गा-गा कर भी गा नहीं पाती हूँ फिर भी गाती जाती हूँ!

हरि ओऽम्! ❖

‘एक वो ही थीं, जो हमें बड़ी माँ की पहचान समझा सकीं!’

डॉ. राहुल गुप्ता

मेरी और मेरे परिवार की बड़ी माँ से पहचान कराने वालीं, पूज्यनीय छोटे माँ ही थीं।

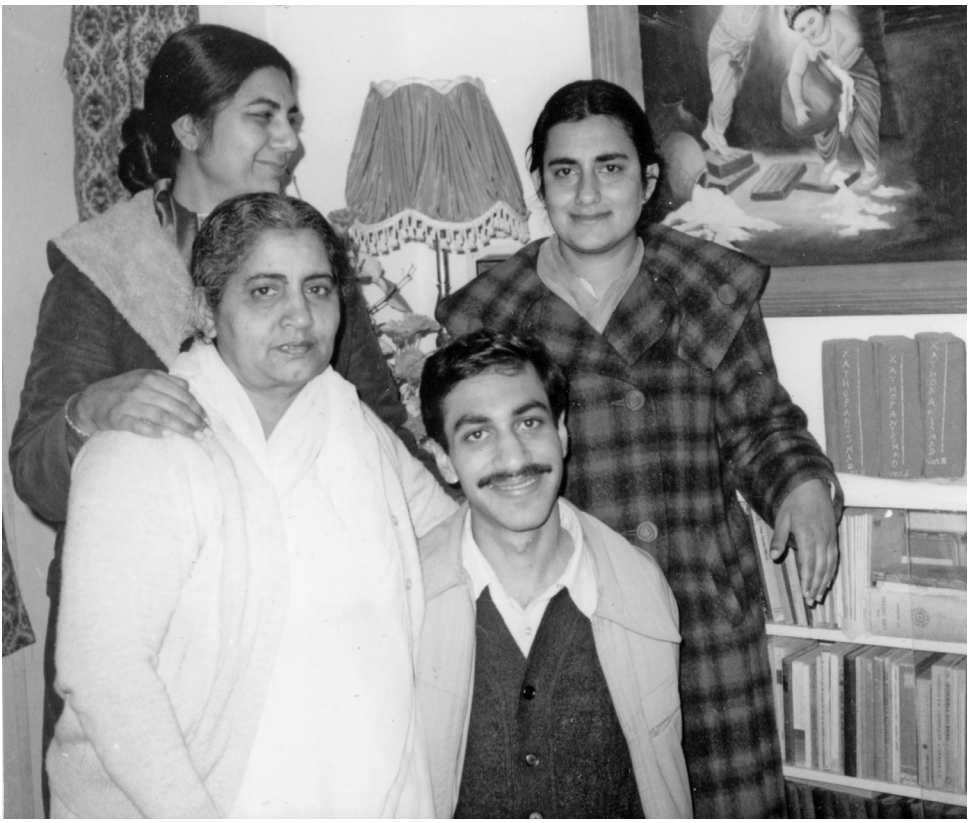

पूज्य छोटे माँ, सुश्री मंजु दयाल, आभा भण्डारी एवं डॉ. राहुल गुप्ता

मुझे आज भी वो दिन याद है - ‘आनन्द नर्सरी होम’, नई दिल्ली, सर्दी के दिन! मैं स्कूल के कपड़ों में एक कोने में बैठा अपने माता पिता के साथ छोटे माँ की बातें समझने की कोशिश कर रहा था। जब उन्होंने अचानक मेरी ओर देख कर पूछा, “आप सब बड़ी माँ से मिलोगे?”

परम पूज्य माँ से प्रसाद ग्रहण करते हुए डॉ. राहुल गुप्ता एवं अन्य सदस्य...

उस पल उन्हें क्या सूझी...

और हमारी किस्मत, कि हमारे सामने ही सूझी!

१९७९ और आज २०१५, इतने साल... इतने दिन... इतने पल... और इतनी सारी सुनहरी यादें!!!

हर याद में एक मिठास, एक अपनापन!

हर याद में जुड़ी बड़ी माँ की कही कोई बात...

और शायद इसलिये हम सब अपने आप को छोटे माँ के इतना क़रीब महसूस करते थे

क्योंकि,

एक वो ही थीं जो हमें बड़ी माँ की पहचान समझा सकीं;

एक वो ही थीं जिनकी श्रद्धा और मेहनत ने बड़ी माँ के कहे हर वाक् को एक फूलों के हार में पिरोया।

एक वो ही थीं जिनकी अपार कृपा से उर्वशी का हर वचन कागज़ के पन्नों में हमारे लिए और आने वाली हर पीढ़ी के लिए मौजूद है।

Every memory of this noble soul is a lesson of divinity...

In the ICU - on a ventilator - she would always be smiling...

never once did I see her frown or wince in pain - when I know that each injection, each tube must have made her so uncomfortable...

ऐसे महापुरुष धरती पर बार बार नहीं आते! ऐसे निःस्वार्थ जीवन बार बार देखने को नहीं मिलते! और ऐसे महापुरुष सदैव जीवित ही रहते हैं... वह कही नहीं जाते! इनकी सुन्दर जीवनी की महक हमारे आस-पास ही रहती है -

मेहनत तो हमें करनी है इस मिठास को महसूस करने की...

मेहनत हमें करनी है उस महक को अपने संग रखने की...

उनके जीवन का लक्ष्य था कि उर्वशी का हर वचन हर गली में, हर घर में उजाला लाए - और यह सपना हम सब को मिलकर पूरा करना है!!

आप सब से मेरा यही अनुरोध रहेगा कि यहाँ से खाली हाथ न लौटें...

पूज्य छोटे माँ ज्योत प्रज्वलित करते हुए...

यह महक अपने साथ ज़रूर ले कर जाएँ। छोटे माँ की जीवनी ही हमारा सबसे बहुमूल्य प्रसाद है!

"राम नाम की लूट है, लूट सके तो लूट।
फिर पाछे पछताएगा, जब प्राण जायेंगे छूट।।"

❖ ❖ ❖

पूज्य छोटे माँ, डॉ. इन्द्र गुप्ता एवं डॉ. राज गुप्ता

'आपकी यादों की अमूल्य निधि, आजीवन हमारे साथ रहेगी...'

डॉ. राज गुप्ता

छोटे माँ अपने नश्वर तन का त्याग कर अपने सखा, अपने गुरु, मार्गदर्शक एवं अपने सर्वस्व - हमारे प्रिय परम पूज्य माँ में जा विलीन हो गये हैं परन्तु वह हम में से प्रत्येक के साथ सुन्दर समय बिता कर, ख़ूबसूरत यादें दे गये हैं, जो हम सब के साथ अमूल्य निधि की तरह आजीवन रहेंगी। धन्यवाद छोटे माँ... मुझे एवं मेरे परिवार के मार्गदर्शन के लिए आपकी सदैव आभारी रहूँगी...

‘जन्म जन्म की बात कहें, पाप तभी धुल पायें।
गर नाम रंगी मन भये, कर्म भी छू नहीं पायें...’

परम पूज्य माँ, श्रीमती देवी वासवानी एवं पूज्य छोटे माँ जिन्होंने पूज्य माँ द्वारा वर्णित सभी शास्त्र लेखनीबद्ध करके सम्पूर्ण मानवता को कृतार्थ किया...

गतांक से आगे–

पौड़ी २०

भरीऐ हथु पैरू तनु देह।
पाणी धोतै उतरसु खेह।
मूत पलीती कपड़ु होइ।
दे साबूणु लईऐ ओहु धोइ।
भरीऐ मति पापा कै संगि।
ओहु धोपै नावै कै रंगि।
पुंनी पापी आखणु नाहि।

करि करि करणा लिखि लै जाहु।
आपे बीजि आपे ही खाहु।
नानक हुकमी आवहु जाहु।।२०।।

शब्दार्थ : हाथ, पाँव, शरीर यदि मैल से भर जायें, तो पानी से धोने से वह मैल दूर हो जाती है। यदि कोई वस्त्र मल-मूत्र से मलिन हो जाये, उसको साबुन लगाकर धो लिया जाता है। यदि बुद्धि पापों से भर जाये, तो वह नाम के रंग से धोई जाती है। पुण्य और पाप कहने मात्र को ही नहीं हैं। (हे जीव!) कर्म करके (तुम) लिख कर (अपने) साथ ले जाओगे। (तुम) आप ही (कर्म) बीजकर आप ही उसका फल खाओगे। जीव (उस मालिक की) आज्ञा से (संसार में) आता है और हे नानक! (उसकी आज्ञा से ही संसार छोड़कर) जाता है।

पूज्य माँ :

हाथ पैर मैले भये, पानी से धुल जायें।
कपड़ा मूत्र मल पूर्ण हो, साबुन से धुल जाये।।१।।

मति भरी पाप के संग, नाम रंग धुल पाये।
पुण्यवान् पापी क्या कहें, जो करे वही संग जाये।।२।।

करनी धरे बीज का रूप, जन्म जन्म संग जाये।
जैसा बीज हो वैसा पाये, निज कर्म फल जग खाये।।३।।

नानक हुकमी सब जन्म, हुक्म बन्धे सब पाये।
जो हुक्म हुज़ूर होये, हो ज़हूर मन चाहे न चाहे।।४।।

जो वा भाये वो होये, वह तो तोले जाये।
कर्म किये जो गुण बहे, वह ही रूप धरी आये।।५।।

जन्म जन्म की बात कहें, पाप तभी धुल पायें।
गर नाम रंगी मन भये, कर्म भी छू नहीं पायें।।६।।

सो रंगरेज़ा मुझे रंग दे ज़रा, अपने नाम से रंग दे मुझे।
कस धोऊँ पाप को' कर्म करूँ, न जानूँ बस तू मुझे रंग दे।।७।।

ऐसा रंग चढ़ा नानक तू, तेरे नाम का ही अब रंग चढ़े।
इतनी कृपा कर नानका, नाम रंगी यह मन कर दे।।८।।

को' साबुन को' मैल कहूँ, को' जन्म कर्म के बीज कहूँ।
क्या जिये क्या मिले कैसे कहूँ, तेरा हुक्म चले इतना ही कहूँ।।९।।

पर तूने ख़ुद ही आप कहा, मति उज्ज्वल हो गर नाम मिला।
अज चरण पड़ी मन माँग रहा, नाम का रंग मुझपे चढ़ा।।१०।।

ओ नानका तोरे चरण पड़ी, ये ज्ञान की बातें क्या जानूँ।
कर्म गति ओ कर्म पति, उसकी घातें क्या जानूँ।।११।।

तू गुणपति निर्गुणिया भी, तेरा गुणगान भी न जानूँ।
जिस राह तू मिले या दूर रहे, मैं तो इतना भी अब न जानूँ।।१२।।

बस नाम से दामन भर दे मेरा, नाम से मन भरपूर करो।
इतना माँगूँ नानका, नाम हृदय में ज़हूर करो।।१३।।

तुम ही कहो मल धोऊँ कैसे, 'मैं' को कैसे लूँगी धो।
गर नाम मिला तेरा नानका, चरणों में 'मैं' लूँगी खो।।१४।।

सो नाम से दामन भर दे मेरा, चरण में चित्त भी धर ले मेरा।
रंग दे मुझको रंगरेज़ा, अब पक्के रंग से रंग दे मेरा।।१५।।

राम नाम मैं नित गाऊँ, अज तेरा नाम लेई राम कहूँ।
मैं राम कही के नाम तो लूँ, मैं नानक नानक कहा करूँ।।१६।।

बस इतना माँगूँ नानका, मेरा नाम से दामन भर दे ज़रा।
अब प्रेम के रंग से भर दे ज़रा, नानका मेरे मालिका।।१७।।

पौड़ी २१

तीरथु तपु दइआ दतु दानु।
जे को पावै तिल का मानु।
सुणिआ मंनिआ मनि कीता भाउ।
अंतर गति तीरथि मलि नाउ।
सभि गुण तेरे मै नाही कोइ।
विणु गुण कीते भगति न होइ।
सुअसति आथि बाणि बरमाउ।
सति सुहाणु सदा मनि चाउ।
कवणु सु वेला वखतु कवणु कवण थिति कवणु वारु।
कवणि सि रुति माहु कवणु जितु होआ आकारु।
वेल न पाईआ पंडती जि होवै लेखु पुराणु।
वखतु न पाइओ कादीआ जि लिखनि लेखु कुराणु।
थिति वारु न जोगी जाणै रुति माहु न कोई।

जा करता सिरठी कउ साजे आपे जाणै सोई।
किव करि आखा किव सालाही किउ वरनी किव जाणा।
नानक आखणि सभु को आखै इकदू इकु सिआणा।
वडा साहिबु वडी नाई कीता जाका होवै।
नानक जे को आपौ जाणै अगै गइआ न सो है।।२१।।

शब्दार्थ : तीर्थ, तप, दया और दान देकर यदि कोई मान पाता है, तो वह केवल तिल के समान (तुच्छ) है। जिसने (नाम को) सुनकर (उसे) माना और मन में (उससे) प्रेम किया है, वह आन्तरिक तीर्थ में मल मल कर स्नान करता है। हे प्रभु! सब गुण आप के हैं, मुझ में कोई (गुण) नहीं। (जीवन में) गुण प्राप्त किये बिना भक्ति नहीं हो सकती। ब्रह्ममयी वाणी (शास्त्रों की वाणी) कल्याण स्वरूप है, वही सत्य है, चैतन्य है और सदैव आनन्द स्वरूप है। कौन सा वह समय और वक्त था, कौन सी तिथि और कौन सा वार था, कौन सी वह ऋतु और कौन सा मास था, जिस समय संसार की रचना हुई थी? वह समय पण्डितों ने भी नहीं पाया (अर्थात् पण्डितों को भी समझ नहीं आया)। यदि (उन्होंने पाया) होता, तो पुराण में उसका कोई लेख होता। काज़ियों ने भी वह समय नहीं पाया, यदि पाया होता, तो वह कुरान में लेख लिख देते। योगी भी वह तिथि तथा वार नहीं जानता, न कोई ऋतु तथा मास ही जानता है। जो कर्ता पुरुष सृष्टि की उत्पत्ति करता है, वह आप ही सब कुछ जानता है। किस प्रकार (उसका) कथन करूँ और किस प्रकार (उसकी) प्रशंसा करूँ? (मैं) किस प्रकार (उसका) वर्णन करूँ और कैसे (उसके) भेद को जानूँ? हे नानक! कहने को तो हर कोई एक से एक चतुर बन कर कहता है कि वह स्वामी बड़ा है, उसकी महिमा अपार है, जिसका किया हुआ सब कुछ होता है। हे नानक! यदि कोई अपने आपको बड़ा जानता है, तब वह आगे जाकर शोभा नहीं पाता (अर्थात् उसका कल्याण नहीं होता)।

पूज्य माँ :

तीर्थ तप और दीन दया, जग में जाई दिये दान।
इन राही जो मान मिला, उसे केवल तिल भर जान।।१।।

जिस श्रवण किया फिर मनन किया, मन प्रेम भाव से भर लिया।
वा आन्तर तीर्थ हो गया, पूर्ण मल वा धुल गया।।२।।

हे नानक तू अखिल गुणी, मुझमें गुण न कोय।
कर्म रूप गुण नहीं धरें, भक्त कभी न होए।।३।।

परमात्म से उपजे माया, वाणी भी वही बहाये।
सत्य सौन्दर्य मनो पावन, आप वही बन जाये।।४।।

कौन बेला कौन समय, को' तिथि को' वार।
को' ऋतु को' मास वो, निराकार होये साकार।।५।।

पण्डित समझ न समझ सके, वरना पुराण में लिख देते।
काज़ी समझ न समझ सके, वरना कुरान में लिख देते।।६।।

योगी योग में रमण किये, तिथि न जाने न वार।
ऋतु मास कब माया उपजी, कब रूप धरी संसार।।७।।

जो निरन्तर नित्य कर्ता, जो मेरा कर्तार।
अपनी करनी ख़ुद जाने, वो जाने है महाराज।।८।।

कैसे कब ये क्यों उपजे, केवल जाने सरकार।
यह कैसे हुआ यह क्यों हुआ, जाने मेरा कर्तार।।९।।

कैसे करूँ चर्चा उसकी, कैसे उसे सहराऊँ मैं।
मैं करूँ वर्णन कस उसकी, कैसे उसको जानूँ मैं।।१०।।

जग में बहुत हैं चतुर सयाने, सब बहु बातें कहें।
पर सब सों बड़ा मेरा साहिबा, होये जो ख़ुद वह कहें।।११।।

जो कहें वह जाने वो न जाने, गुमान में जो रहें।
परम को वो क्या जानें, जो कहें हम सब जानें।।१२।।

ज्ञान गुमान जिसे भये, वो ज्ञान न साथ चले।
कहे मेरा मन मालिका, गुण किये ही भक्त भये।।१३।।

जो सुनया जो मानया, जो कर्म में जा उतरे।
आन्तर तीर्थ हो जाये, वा मल भी धुल जाये।।१४।।

गुण चर्चा से गुणी न हो, गुण किये ही गुणी भये।
ज्ञान गुमानी क्या पाये, वा राही कुछ न मिले।।१५।।

तूने समझाया मालिका, किये ही भक्त भये।
लाख नाम का जपन करूँ, तू ही मोसों दूर रहे।
श्रवण मनन की बात नहीं, कर्मन् में उतरे।।१६।।

मेरे दिलरुबा ओ मेरे मेहरबान!

गर तू रहम करे, मेरा मन तब रंग सके।
तेरी बेरुख़ी परवरदिगार, अब मैं नहीं सह सके।।१७।।

पतित उद्धारन् दीनानाथ, मल विमोचक तेरा नाम कहें।
भक्त वत्सल आप तू, पाप विमोचन तू कर दे।।१८।।

वह पारस तेरा नाम है, मुझे अपना नाम ही दे।
आन्तर मल मेरी धुल जाये, आन्तर तीर्थ ही भये।।१९।।

गुण गाये तू नहीं मिले, गुणपति तू ही तो कहे।
पर बिन किये गुण नहीं मिले, कर्मन् में गुण भर दे।।२०।।

मैं गुण को' माँगूँ गुणपति, गुण दरिया निर्गुणिया है तू।
तू गुणातीत तू गुणाधीश, बिन गुण अखिल गुणी है तू।।२१।।

मैं गुण को' माँगूँ ओ दयानिधि, जो चाहे तू कर दे।
कोई विधि कर नानका, मेरे चित्त में तू ही रहे।।२२।।

गर चरणा तोरे चित्त में हों, मन चित्त में टिका रहे।
'मैं' की मल पल में धुले, तेरा नाम ही बहा करे।।२३।।

बस इतना कर दे नानका, चित्त में तेरा नाम रहे।
गुण किये ही गुणी भये, यह ज्ञान न समझ पड़े।।२४।।

पर रोम रोम जो कर्म करे, तेरा नाम ही कर्म वह ले।
धरती पर जहाँ क़दम पड़े, तेरा धाम ही वह भये।।२५।।

साक्षी बनी मेरे संग रहे, हर कर्म पे रंग चढ़े।
छवि बसे मेरी आँखों में, दुष्कर्म न हो सके।।२६।।

तेरे दरगाह में दरबार में, तुझसे माँग रहे।
साक्षित्व जीवन में तेरा मिले, हर गुण तव कर्म भये।।२७।।

ओ मालिका इतना कर दे, तू हर पल संग रहे।
रोम रोम पे मालिका, चढ़ा तेरा रंग रहे।।२८।।

फिर जो श्रवण किया है कभी, मन पल में मान ले।
इक पल में वह कर्म भये, गर तू मेरे संग रहे।।२९।।

वह कहते हैं :- *'जो सुणिआ, जो मंनिआ, जो कीता'*- अगर जो श्रवण किया है, उसको हमने मान लिया और मान के किया और जीवन की राह वर्ता, तो यह मन तीर्थ बन जायेगा

और यहाँ आन्तर मल सब धुल जायेगी। यह सब एक पल में हो जायेगा। फिर वह कहते हैं, अखिल गुणी तो वह भगवान हैं, पर गुण गाये गुण नहीं पाये, गुण किये जीवन में गुण उतरें, तो ही भक्त कहलाये। गर गुण का हमने जीवन में वर्तन नहीं किया, तो भक्त नहीं बनते। आगे कह रहे हैं :-

ज्ञान गुमानी क्या पाये, जो कहे हम सब पाये।
जब तक 'मैं' है भगवान नहीं, इस राही तो नाम गंवाये।।

तो हमें यह देखकर यही कहना है :-

हे नानका! हम तो तेरे नाम भिखारी, तेरे दर पे आये।
ज्ञान क्या करूँ :-
रोम रोम में नाम बसे, यह ही माँगने आये।।

क्योंकि :-

गर हर पल तू मेरे साथ रहा, तो रोम रोम गुण गाये।
हर कर्म तेरा गुण गाये, तन मन तेरा हो जाये।।

इसलिये मीठा लागे नाम, मुझको नाम दे दे आज! इतनी ही बस बात है, इतनी सी फ़रियाद है। तेरे साक्षित्व में साहिब बिन कुछ नहीं कह सकूँगी। यहाँ तिल के मान की बात कह रहे हैं। वह कहते हैं सारे जहान का जो मान है, वह तिल के समान है।

नाम में खोये जिस चरण मिले, वह क्या करेगा मान।
जिस हृदय में नानक बसे, वह क्या करे जहान।।१।।

पूर्ण जग इक ओर रहा, दूजी ओर हैं राम।
नानक नानक कहा करें, मिल जाये हम को नाम।।२।।

क्या करें जग के नाम को, मिले घटे मिट जाये।
दिनों दिन बढ़ता भी गया, प्राण गये वह जाये।।३।।

पर ऐसा मान हम क्या करें, जो जन्म जन्म न जाये।
जिसको नाम ही मिल गया, वह जग का मान क्या चाहे।।४।।

वह यही कह रहे हैं कि यह सब तिल भर का है। हे इन्सान उठ! अपने आन्तर की मल धो ले और भागवत् गुण, जिसे समझा है, वह जीवन में ले आ। इससे तुम्हें पूर्ण चैन मिल जायेगी इस जीवन में और अमरत्व मिल जायेगा! इन्सान और क्या चाहता है? - क्रमशः

‘मेरे जीवन को सुंदरता से भरने के लिए मैं उनकी आजीवन ऋणी रहूँगी...’

डॉ. इला आनन्द

पूज्य छोटे माँ के साथ डॉ. इला आनन्द

आज हम यहाँ पूज्य छोटे माँ को श्रद्धांजलि देने के लिए एकत्रित हुए हैं... और भगवान जी का धन्यवाद करते हैं कि उन्हें शारीरिक दर्द को इतनी धीरता से सह पाने की शक्ति प्रदान की एवं उनके कष्ट को विराम दिया।

मैं उन्हें धन्यवाद देना चाहूँगी - वो मेरे लिए एक बड़ी बहन, एक मार्गदर्शक और सबसे ज़्यादा एक ‘माँ’ थीं... जिन्होंने प्रेम, धैर्य एवं ईमानदारी जैसे गुणों को अपने जीवन में धारण किया।

मेरे सम्पर्क के पहले कुछ वर्षों में मैंने उन्हें श्री सी.एल. आनन्द (पूज्य माँ के पिता जी) को चुपचाप ढाढस बंधाते देखा जब उनकी पत्नी (बीबीजी) अपने जीवन के अंतिम क्षणों में अत्यन्त शारीरिक पीड़ा से जूझ रहीं थीं।

पिता जी के साथ आध्यात्मिकता के विषय (जो उन्हें अत्यन्त रुचिकर था) पर विचार विमर्श करने से वह बीबी जी की पीड़ा पर से पिता जी का ध्यान हटा पाने में सक्षम होती थीं। पिता जी को इस प्रकार सुकून दे पाने से मैं छोटे माँ से अत्यन्त प्रभावित हुई।

यह उस समय की बात है जब हम 'आनन्द नर्सिंग होम' में थे, जहाँ उन्होंने हमें उर्वशी और अध्यात्म की सुंदरता से अवगत करवाया। ये उनका झुकाव ही था जो छोटे माँ ने उद्घाटन समारोह पर बहुत बड़ी मात्रा में प्रसाद बाँटने के लिए हलवा बनाया।

रोगियों को देखने या अपने पौधों की देखभाल करने में जब हमारा ध्यान भटक जाता तो भी उन्होंने उतनी ही धीरता दिखाई। हमारी सुविधा के अनुसार वह अपने समय में बदलाव कर दिया करते थे... या तो कहीं और सत्संग का समय रखकर या डॉ. आनन्द के साथ गाड़ी में ईएसआई अस्पताल जाकर, जहाँ वह काम करते थे।

धीरे धीरे हमने उनके साथ ज़्यादा समय बिताना आरम्भ कर दिया। वह अपने दोषों को छिपाए बिना, पूज्य माँ के साथ अपने जीवन के उदाहरण दिया करते।

पूज्य छोटे माँ के साथ डॉ. ए. के. आनन्द एवं डॉ. इला आनन्द

कभी जब हमें व्यावहारिक स्तर पर समझ न आता तो वह फिल्मों के उदाहरण से हमें समझातीं जो वह हमें दिखाने भी ले जाती थीं। इससे हमें समझ आने लगी कि आध्यात्मिकता केवल श्रवण का विषय नहीं एवं उर्वशी के दिव्य प्रवाह को मात्र पढ़ने से नहीं बल्कि अपने जीवन के विभिन्न पहलुओं में लागू करने से सार्थक होती है। इस प्रकार मेरे निजी एवं व्यवसायिक जीवन में पारस्परिक संबंधों में काफ़ी महत्वपूर्ण अन्तर आया। इसने मुझे आत्म-विश्लेषण करने एवं स्वयं की कमज़ोरियों की पहचान कर पाने में सहायता की।

पूज्य छोटे माँ ने इस प्रकार मेरे जीवन की नैया को थाम लिया।

मेरे जीवन को सुंदरता से भरने के लिए मैं उनकी आजीवन ऋणी रहूँगी। डॉ. आनन्द द्वारा भजनों की संगीत रचना में भी उन्होंने बड़ी भूमिका निभाई। शुरु में वह शब्दों का चयन करती थीं परन्तु धीरे धीरे सत्संगों में उनका चयन किया जाने लगा। और इस तरह डॉ. आनन्द ने ३०० से अधिक भजनों की संगीत रचना की।

असल में उर्वशी छोटे माँ के लिए जीवनदायिनी थी। परम पूज्य माँ द्वारा गाया गया स्वतः स्फुरित प्रवाह को पूज्य छोटे माँ ने बहुत ईमानदारी से पठनीय हस्तलेखन में लिखित किया। इस प्रकार प्रार्थनाओं, सत्संगों, गीता के ३ अध्ययन एवं कई उपनिषदों के साथ २६ बड़े शास्त्रों का निर्माण हुआ। अगर छोटे माँ ने यह दिव्य कार्य न किया होता तो आने वाली पीढ़ियों के लिए यह ज्ञान लुप्त हो जाता। अगर वह नहीं होतीं तो हम "Love All" के निहित अर्थ को जान ही न पाते।

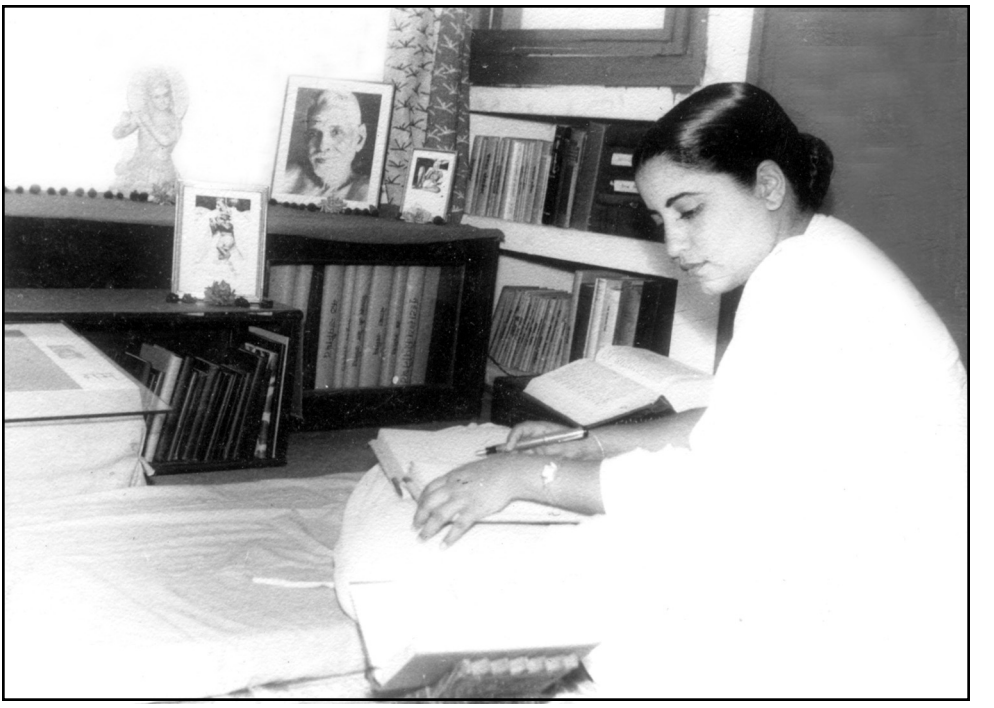

पूज्य छोटे माँ के साथ डॉ. ए. के. आनन्द

पूज्य छोटे माँ का प्यार सभी के लिए छोटे छोटे कर्मों द्वारा प्रदर्शित होता था। वह अपने विस्तृत परिवार एवं सत्संगियों के सभी सुखद अवसरों एवं दुःखद क्षणों को याद रखतीं। इस प्रकार से वह सब के प्रति करुणा का प्रदर्शन करतीं। उनके मन में कभी भी किसी प्रकार का छल एवं दुर्भाव नहीं था।

अपनी आख़िरी बिमारी में उन्होंने असामान्य शान्ति एवं धैर्य का परिचय दिया। उन्हें किसी से कोई शिकवा नहीं था एवं सभी को उन्होंने आशीर्वाद ही दिया। उन्हें डॉ. आर. आई. सिंह पर आपार विश्वास था और उनकी देखभाल से वह पूरी तरह संतुष्ट थीं। डॉ. सिंह ने भी छोटे माँ की देखरेख में कोई कसर नहीं छोड़ रखी थी। छोटे माँ को इस तरह आराम पहुँचाने के लिए मैं डॉ. सिंह को उनकी इस विशेष सहानुभूति के लिए धन्यवाद देना चाहुँगी। उन्होंने मुझे कहा, 'यह सब मैं अपने आप के लिये कर रहा हूँ'। मैं सारे स्टाफ़, सभी डॉक्टरों एवं छोटे माँ की विशेष रूप से देखभाल करने के लिए मेटरन का धन्यवाद करना चाहुँगी।

मैं डॉ. राहुल गुप्ता को भी धन्यवाद देना चाहुँगी जिन्होंने फॉरटिस एस्कॉर्ट अस्पताल में छोटे माँ के उपचार के विभिन्न पहलुओं में भी समन्वय बनाए रखा।

छोटे माँ, ४० वर्षों से अधिक समय के लिए मेरे मार्गदर्शक एवं मेरी 'माँ' बनने के लिए धन्यवाद! मुझे हमेशा आपकी कमी महसूस होगी और मैं प्यार एवं कृतज्ञता से आपको याद करती रहूँगी। ❖

'...प्रेम सच्चा हो तो, प्रेमास्पद के गुण प्रेमी में आ ही जाते हैं!'

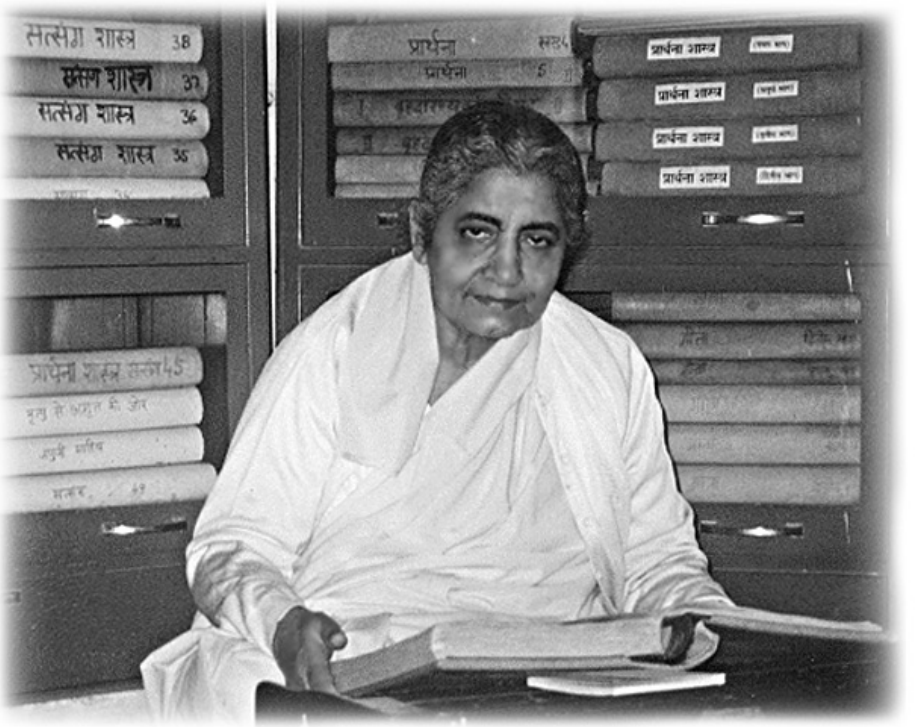

हमारे प्रिय एवं श्रद्धेय छोटे माँ १० मई को अपने नश्वर तन का त्याग करके अपने सर्वस्व, अपने प्रिय सद्गुरु परम पूज्य माँ के श्री चरणों में जा लीन हो गये। मानवता सदैव पूज्य छोटे माँ की ऋणी रहेगी जिन्होंने प्रेमपूर्वक अपने जीवन के लम्बे समय तक पूज्य माँ द्वारा प्रवाहित शास्त्रों व अथाह ज्ञान का सागर का लेखन एवं उनका प्रचार/प्रसार किया।

य इमं परमं गुह्यं मद्भक्तेष्वभिधास्यति ।
भक्तिं मयि परां कृत्वा मामेवैष्यत्यसंशयः ।।

(श्रीमद्भगवद्गीता - अध्याय १८ श्लोक ६८)

भगवान कहते हैं :

शब्दार्थ :

१. जो इस परम गुह्य तत्व को,
२. परम प्रेम करके मेरे भक्तों में कहेगा,
३. वह निस्सन्देह मेरे को पायेगा।

तत्व विस्तार :

नन्हीं! यह ज़रा ध्यान से समझ! अब भगवान अधिकार की बातें कहते हैं।

ज्ञान के अधिकारियों का वर्णन :

क) जो इस परम गुह्य ज्ञान से प्रेम करते हैं,

ख) जो इस परम गुह्य ज्ञान से अपना जीवन रंग लेते हैं,
ग) जो इस परम गुह्य ज्ञान की प्रतिमा बनना चाहते हैं,
घ) जो इस परम गुह्य ज्ञान की प्रतिमा बन जाते हैं,
ङ) जो इस परम गुह्य ज्ञान को मेरा आदेश मानते हैं,
च) जो इस परम गुह्य ज्ञान को मेरा संदेश मानते हैं,

वे मेरी बात मानेंगे ही, मेरे कहे पर चलेंगे ही।

यानि, वे :

१. निष्काम कर्म व भक्ति परायण होंगे ही।
२. निष्काम ज्ञान पूर्ण होंगे ही।
३. निष्काम सर्वभूतहितेरताः होंगे ही।
४. सर्वारम्भपरित्यागी होंगे ही।
५. सब लोगों में मैत्री भाव रखेंगे ही।
६. दैवी गुण सम्पन्न होंगे ही।
७. वे गुणों से विचलित न होने वाले गुणातीत होंगे ही।
८. वे स्थित प्रज्ञ बन ही जायेंगे।
९. वे अतीव साधारण लोगों के साथ एक रूप होकर रहने वाले होंगे।
१०. वे लोगों को विचलित नहीं करेंगे।
११. वे मान अपमान के प्रति तुल्य दृष्टि रखने वाले होंगे ही।
१२. वे हानि लाभ, जय पराजय के प्रति तुल्य दृष्टि रखने वाले होंगे ही।
१३. वे हर धर्म परायण से प्रेम करने वाले होंगे ही।
१४. वे हर बुरे या दुष्ट से प्रेम करने वाले होंगे ही।

भाई! वे भगवान को उन्हीं के जीवन से तोलेंगे। वे उनके गुण उन्हीं के जीवन से समझेंगे, फिर वे गुण अपने जीवन में ले आयेंगे। वास्तव में गुण समझने से गुण आते हैं। सच्चा प्रेम हो तो प्रेमास्पद के गुण प्रेमी में आ ही जाते हैं।

फिर, जब वे भक्त गण विस्तार पूर्वक भागवत् गुण समझायेंगे, तब अन्य सत्यप्रिय लोग भी भागवत् गुणों को अपने जीवन में ले आयेंगे।

प्रेम :

नन्हीं प्रेम प्रिय, पुनः समझ!

क) प्रेम का दूसरा नाम समर्पण है।
ख) प्रेम का दूसरा नाम ज्ञान तथा विज्ञान है।
ग) प्रेमी अपने प्रेमास्पद को जानने के नित्य यत्न करता रहता है।
घ) प्रेमी अपने प्रेमास्पद के तद्रूप हो जाता है।
ङ) प्रेम का परिणाम एकरूपता व अद्वैत है।
च) प्रेम ही जीव को अपना तन भूलना सिखा देता है।
छ) प्रेम ही जीव को अपना मन भूलना सिखा देता है।
ज) प्रेम ही जीव को अपना आप भूलना सिखा देता है।
झ) प्रेम ही जीव की बुद्धि को झुका देता है।
ञ) प्रेम ही जीव को कर्तव्य परायण बना देता है।
ट) प्रेम ही जीव को इन्सान से देवता बना देता है।
ठ) प्रेम का दूसरा नाम तप है। वह सब कुछ सहता हुआ, नित्य मुसकुराता हुआ जीव को तपस्वी बना देता है।
ड) प्रेम का दूसरा नाम दान ही है।

प्रेमी :

१. प्रेमी अपना तन, मन, धन, सब अपने

प्रेमास्पद पर न्योछावर कर देता है।

१. प्रेमी अपने प्रेमास्पद को नित्य रिझाता रहता है।
२. वह यही समझता है कि मैंने अभी कुछ नहीं किया।
३. प्रेमास्पद की मौज ही प्रेमी का जीवन है।
४. प्रेमास्पद की स्थापति ही प्रेमी का एक मात्र ध्येय होता है।
५. प्रेमी का हर कर्म निष्काम ही है।
६. प्रेमी की उपासना निष्काम ही है।
७. प्रेमी का ज्ञान भी निष्काम ही है।
८. प्रेमी अपने लिये कोई योजना नहीं बनाता, वह काम्य कर्म परित्यागी होता है।
९. प्रेमी अपने लिए कोई कार्य नहीं करता, वह सर्वारम्भपरित्यागी होता है।

मेरी जान्!

- उसे तो अपना नाम भी याद नहीं रहता।
- उसे तो अपने तन की भी विस्मृति हो जाती है।
- उसे तो अपने मन का भी ध्यान ही नहीं रहता।

प्रेमी 'मैं' को कब याद रख सकता है? उसे तो 'मै' की जगह अपना प्रेमास्पद याद रहता है। शनैः शनैः उसे कुछ भी याद नहीं रहता, प्रेम करना उसका सहज स्वभाव हो जाता है। वह सहज में :

क) निश्चल हो जाता है।
ख) वफ़ादार हो जाता है।
ग) नित्य कृतज्ञता पूर्ण हो जाता है।
घ) नित्य सत्यनिष्ठ हो जाता है।
ङ) विनम्रता भी उसका स्वरूप है, किन्तु याद रहे वह झुक कर दूसरे को दिखाता नहीं।
च) उदार हृदय तो वह हो ही जाता है, किन्तु दूसरे को पता भी नहीं लगने देता।
छ) वह दूसरों के लिए सब कुछ करता है पर स्वयं छिप जाता है।
ज) ऐसे की अनुकम्पा क्या कहिये, जो अपने आप को हर स्तर पर गिरा कर भी दूसरों को स्थापित करने में लगा रहता है।
झ) आत्म त्याग उसके जीवन का निहित सार होता है।
ञ आत्म संयम उसके जीवन का निहित सार होता है।
ट) क्षमा का वहाँ प्रश्न ही नहीं उठता, क्योंकि वह अपने आपको भूल जो जाता है।

प्रेम का पथ ही निराला है। प्रेमी तो मतवाला है, यही लोग कहते हैं। हे मेरी जान्! बात भी यही है। उसका जीवन एक अखण्ड यज्ञ ही होता है। उस यज्ञ में वह अपनी ही आहुतियाँ देता रहता है, और उसके प्रेमी गणों को उसके प्रेमास्पद रूप कर्म का प्रसाद मिल जाता है।

भाई! ऐसे का जीवन सारांश परम, पावन ज्ञान ही है। ऐसे का जीवन में हर अनुभव परम अनुभव ही है।

प्रेमी का स्वरूप :

- गुणातीतता तो उसके दृष्टिकोण का सहज गुण है।
- दैवी गुण उसके सहज आभूषण हैं।
- प्रज्ञा तो स्थिर हो ही जायेगी, जब 'मैं' का कहीं नामोनिशान ही न रहे।

मेरी जान्! गर प्रेमास्पद प्रेमी से पूछे कि :

१. मैं तुम्हारे लिए क्या करूँ?
२. कहो, तुम्हारी खुशी किसमें है?

तो प्रेमी क्या कहेगा :

'हम तुम्हारे हैं। तुम हर विधि प्रसन्न रहो, इसी में हमारी खुशी है। तुम्हारी सेवा ही हमें सर्वोत्तम सुखप्रद है। मेरी जान जाये तो जाने दो, पर मेरी जाने जान्! तुम खुश रहना।'

तो इसको यूँ समझ ले कि 'जाने जान' के पास दो तन हो गये रिझाने को, प्रेमी के पास एक भी नहीं रहा।

प्रेम का परिणाम :

इस प्रेम के परिणाम स्वरूप एक साधारण जीव देवता बन जाता है, एक आत्मवान् भगवान बन जाता है।

गर प्रेम भगवान से हो जाये तो जीव :

क) भगवान के सब बन्दों से प्रेम करने लगता है

ख) भगवान के गुणों से प्रेम करने लगेगा।

ग) उसे भगवान के गुणों से संग हो जायेगा।

क्योंकि प्रेम भगवान से होगा, जहान से जो भी मिले, उसकी परवाह नहीं रहेगी।

भगवान से प्रेम का अर्थ :

मेरी लाडली नन्हीं! भगवान की आभा सुन :

१. भगवान से प्रेम करने वाले की वफ़ा भगवान के गुणों से होती है, दैवी गुणों से उसकी दृष्टि भगवान में टिकी होती है और शरीर भगवान के अर्पित हुआ होता है।

भगवान के प्रेमी का जीवन :

वह मानो बड़ी बातें तथा औरों के बड़े बड़े प्रहार माफ़ कर देते हैं किन्तु छोटी छोटी बातों में देखने में लड़ पड़ते हैं। इस कारण वे साधारण लोगों में साधारण ही दिख पड़ते हैं और साधारण लोग उन्हें छोटी छोटी बातों के लिए क्षमा नहीं करते, बल्कि उनके स्वरूप पर संशय करने लगते हैं।

गर आपमें सहन शक्ति नहीं है गर आप में तप नहीं है, गर आपको भगवान के गुणों से संग नहीं है, गर आपको भगवान के गुणों से प्यार नहीं है; तो आप भगवान की चाहना छोड़ दो, आप भगवान को नहीं पा सकते।

भगवान कहते हैं, जो मुझसे ऐसा परम प्रेम करेंगे, वे मेरे भक्त, यदि मेरे में भक्ति रखने वाले श्रद्धापूर्ण लोगों को यह ज्ञान समझायेंगे, वे मुझे ही पायेंगे।

नन्हीं !

- ऐसा भक्त जो भी ज्ञान कहेगा, उसकी प्रतिमा वह स्वयं होगा।
- ऐसा भक्त जो भी ज्ञान कहेगा, उसका प्रमाण वह स्वयं ही होगा।
- ऐसा भक्त जो भी ज्ञान कहेगा, उसका रूप वह स्वयं होगा।

ज्ञान स्वरूप और ज्ञान रूप वह स्वयं होगा।

न च तस्मान्मनुष्येषु कश्चिन्मे प्रियकृत्तमः।
भविता न च मे तस्मादन्यः प्रियतरो भुवि।।

(अध्याय १८ श्लोक ६९)

अब आगे भगवान कहते हैं कि अर्जुन!

शब्दार्थ :

१. मुझसे प्रेम करने वाले और मेरे भक्तों को मेरा गुह्य रहस्य समझाने वाले से

२. बढ़ कर मेरा प्रिय कर्म करने वाला,

३. मनुष्यों में न कोई और है

४. और न उससे बढ़ कर अत्यन्त प्यारा,

५. मेरा पृथ्वी पर दूसरा कोई होगा।

तत्व विस्तार :

देख नन्हीं! भगवान अपनी ही पसन्द की बात कहते हैं।

प्रेमी भक्त :

ऐसा भगवान का भक्त :

१. भगवान का सजातीय ही होगा।
२. भगवान के समान गुणों वाला ही होगा।
३. भगवान के गुणों का रूप व स्वरूप जानने वाला होगा।
४. कोई अनुभवी ही होगा।
५. उसका अपना जीवन भी भागवत् गुण पूर्ण ही होगा।
६. वह भगवान की जीवन रूप ज्योति से भगवत् ज्ञान को ज्योतिर्मय करके समझा होगा।
७. वह अपने तन, मन, बुद्धि को भागवत् गुणों पर न्योछावर किये बैठा होगा।

यानि, वह अपने जीवन की बाज़ी लगा कर अपनी दैवी सम्पदा का संरक्षण करता होगा।

वे अपनी जान छोड़ सकते हैं,

- क्षमाशीलता नहीं छोड़ सकते।
- वफ़ा नहीं छोड़ सकते।
- प्रेम का स्वभाव नहीं छोड़ सकते।
- करुणा पूर्णता नहीं छोड़ सकते।
- न्याय नहीं छोड़ सकते।
- अपने तन की स्थापना की चाहना नहीं कर सकते।

नन्हीं! गर समझ सको तो समझ लो, वह तो :

क) प्रेम की चादरिया पहरे हैं।
ख) नाम का कफ़न पहरे हैं।
ग) अपने तन, मन को भूले बैठे हैं।
घ) उन पर 'मैं' का राज्य नहीं, भगवान का राज्य है।
ङ) वे अपना तन भगवान को दिये बैठे हैं। वे अतीव साधारण लोग होते हैं, किन्तु फिर भी उनसे विलक्षण कौन होगा?

भगवान कहते हैं, नन्हीं! ऐसे लोग मुझे प्यारे हैं। ऐसे लोगों से बढ़ कर मेरा अत्यन्त प्यारा धरती पर कोई और नहीं है। ऐसे लोग जो भी कर्म करते हैं, मुझे बहुत प्यारे हैं। नन्हीं बच्चू देख! उनकी साधुता के चिह्न ज़रा विलक्षण होंगे!

१. वे अपनी साधुता के गुमानी नहीं हो सकते।
२. वे दूसरे को निकृष्ट या दुष्ट कह कर उससे दूर नहीं हो सकते।
३. वे साधारण लोगों के साथ साधारण रूप में रहेंगे।
४. वे लोगें की मान्यता का भंजन नहीं करते।
५. वे तो अपने तन से बेसुध हैं, ऐसों का तन दूसरों के तन की निरन्तर सेवा करता है।

दूसरे के तद्रूप होकर, उसकी चाहनाओं के अनुरूप होकर भी वे अपने स्वरूप में स्थित ही जीवन बसर करते हैं। फिर यूँ समझो मेरी जान्!

- जो क्षमा स्वरूप हो, उसका दुश्मन कौन हो सकता है?
- जो वफ़ा स्वरूप हो, उससे बेवफ़ाई कोई क्या करेगा?

भगवान कहते हैं, उन्हें ऐसे लोग प्रिय होते हैं।

❖ ❖ ❖

'जिस राह पर छोटे माँ ने हमें चलाने का प्रयास किया है, उन मूल्यों को हम अपने जीवन में कभी क्षीण नहीं होने देंगे!'

श्रीमती अन्नु कपूर

"गुरु गोबिन्द दोनों खड़े, काके लागूँ पाए
धन्य गुरु मेरे आपुनो, जिन गोबिन्द दियो दिखाए"

परम पूज्य माँ के साथ हमारा जीवन कुछ इस तरह से ही प्रारम्भ हुआ है –

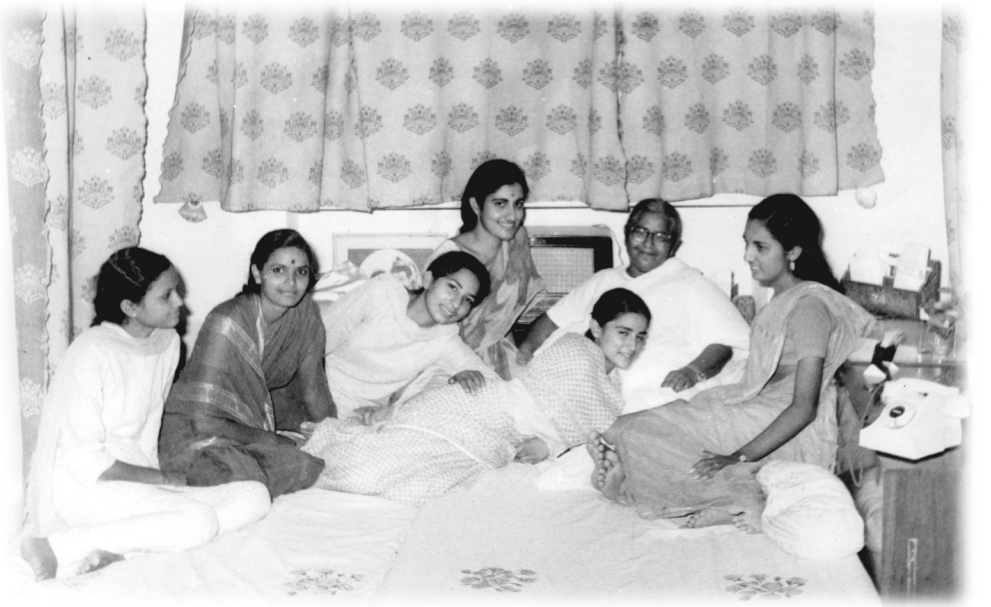

बचपन के हसीन पल... परम पूज्य माँ के साथ अन्नु कपूर, आभा भण्डारी, प्रिया दयाल एवं अन्य.

मेरा बचपन तो उन्हीं की छत्रछाया में पला है। ७-८ वर्ष की आयु से लेकर सब कुछ ही तो छोटे माँ से सीखा। पर आज, मैं पूज्य छोटे माँ के प्रति अपना सबसे अधिक आभार प्रकट करना चाहती हूँ।

जीवन-पर्यंत मेरे पति लव (विवेक कपूर) और पूज्य छोटे माँ का जो दैवी सम्बन्ध बना रहा, वह कोई साधारण रिश्ता नहीं था। एक माँ और बेटे के रूप में इस दिव्य रिश्ते का अवलोकन करने का परम सौभाग्य मुझे भी प्राप्त हुआ।

परम पूज्य माँ, पूज्य छोटे माँ एवं श्री विवेक कपूर परिवार सहित

लव (विवेक कपूर) उस समय के १९ वर्ष के थे... जब वह सर्वप्रथम परम पूज्य माँ के सम्पर्क में आये। उस नाज़ुक युवा अवस्था में जबकि धन अर्जित करने, एक बड़ा आदमी बनने की प्रबल अभिलाषाएं घेरे रखती हैं, उस समय भगवान की आपार कृपा हुई कि उन्होंने लव को अपनी ओर केन्द्रित कर लिया।

परम पूज्य माँ द्वारा रचित सम्पूर्ण शास्त्र, उपनिषद्, भगवद्गीता इत्यादि कई ग्रन्थ जिन्हें पूज्य छोटे माँ ने लेखनीबद्ध किया था, उन सबका लव ने छोटे माँ के सान्निध्य में बैठ कर न केवल अध्ययन किया बल्कि समस्त शास्त्रों को अपने हाथों से लिखा।

वह दोनों प्रातः ३ बजे उठकर लिखना प्रारम्भ करते - और बिना किसी diversion के १८-१८ घण्टे निरन्तर लिखते रहते। ग्यारह वर्ष तक यह क्रम इसी तरह चलता रहा और इसी सम्बन्ध के अन्तर्गत पहली बार लव ने इन्हें "छोटे माँ" कहकर पुकारना आरम्भ किया।

बस तभी से वह लव के लिए एक सुहृद मित्र, philosopher, मार्गदर्शक और एक 'माँ' बन गए। पूज्य छोटे माँ ने केवल पुत्र रूप में लव को ही नहीं अपनाया अपितु हमारे सम्पूर्ण परिवार को भी अपना अभिन्न अंग माना। हमारे बच्चों का छोटे माँ के साथ अपना अलग अलग ही रिश्ता था।

परम पूज्य माँ के दिव्य आशीर्वाद से अपने इस जीवन में छोटे माँ द्वारा किया गया मार्गदर्शन हमारे लिए सदैव उज्जवल रहेगा और जिस राह पर उन्होंने हमें चलाने का प्रयास किया है, उन मूल्यों को हम अपने जीवन में कभी क्षीण नहीं होने देंगे! ❖

पूज्य छोटे माँ की याद में श्रद्धासुमन...

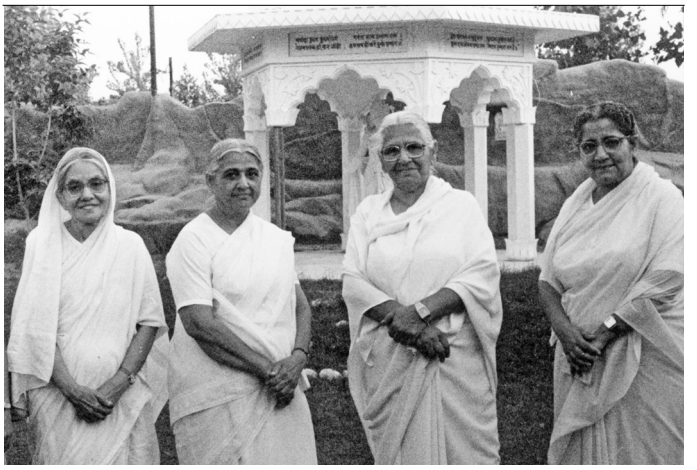

परम पूज्य माँ के साथ पूज्य छोटे माँ और कम्बर दरबार के गोपी दादी व कमला दादी

कम्बर दरबार - मई के महीने में कई दिव्य मार्गदर्शक ब्रह्म में जा लीन हो गये। शुक्रवार को भाभी कल्प के बाद, करनाल के छोटे माँ ने इस धरा को छोड़ कर स्वर्ग में जाने का निश्चय लिया। गुरु नानक जी ने भक्ति में खोए हुए गा-गा कर प्रभु की प्राप्ति की। इसी प्रकार छोटे माँ भी 'प्रेम भाव भक्ति' और राम जी के भजनों के भावपूर्ण गायन के लिए जाने जाते थे। उनके मुसकुराते चेहरे और सरल आचरण को भी उनकी आध्यात्मिकता और सादगी की तरह ही संजोया जायेगा। डॉ. आनन्द द्वारा रचित एवं छोटे माँ के अत्यन्त पसंदीदा भजन को याद करते हैं :- *'रंग रंग दो रंगरेज़ा, राम रंग में रंग ही दो...'* छोटे माँ, आपको हमेशा याद करेंगे। आप राम जी के चरण कमलो में स्थान पायें और यूँ ही आशीर्वाद की वर्षा करती रहें...

कुन्दा केलकर - ... पूज्य छोटे माँ की उपस्थिति हमारे जीवन में एक वरदान थी। अब वह इस नश्वर तन का त्याग कर हमारे हृदयों में आ स्थित हो गये हैं। हमारे असीम कृतज्ञता भरे प्रणाम...

गुड्डी बहिन जी (श्रीमती कुलदीप साहनी) - ... छोटे माँ अपनी आशीर्वाद भरी मधुर यादें छोड़ गये हैं जिन्हें हम हमेशा याद रखेंगे। उनकी सभी शिक्षाओं, सत्संगों एवं मार्गदर्शन की कमी हमेशा खलेगी...

संजय तलवार - ... छोटे माँ अमर हैं! वह हमारे हृदयों में स्थित हैं। उनका सदैव मुसकुराता हुआ चेहरा मुझे प्रेम और शान्ति की याद दिलायेगा जो वह हमारे जीवन में लाये। उन्होंने हमें जीने का सही उद्देश्य बताया। वह देवत्व का उदाहरण थीं। मैं उन्हें अपने जीवन के सबसे बड़े उपहार के लिए याद रखूँगा जो उन्होंने मुझे दिया... मेरी पत्नी! हम इस महान आत्मा को नमन करते हैं...

ब्रह्म अग्रवाल - ... करुणामयी छोटे माँ मेरे लिए महान प्रेरणा स्रोत् थीं। हम सदैव उन्हें याद रखेंगे। वह एक महान आत्मा थीं, काश मैं उनके साथ अधिक समय बिता पाता। अर्पणा टीम का धन्यवाद जिन्होंने उनका बहुत ध्यान रखा...

फख्ररू एवं सकीना सूत्तरवाला - ...सकीना और मैं छोटे माँ के निधन का दुःखद समाचार पा कर अपनी गहरी संवेदनायें भेज रहे हैं। परम पूज्य माँ के बाद वह सभी के लिए मार्गदर्शन का प्रकाश स्तम्भ थीं। अर्पणा परिवार के प्रति उनके सम्पर्ण भाव के लिए उन्हें याद किया जायेगा...

प्रभा नारंग - छोटे माँ ने मातृदिवस (Mother's day) पर इस दुनिया को छोड़ दिया। यद्यपि उनका नश्वर तन हमारे साथ नहीं है परन्तु उनका आध्यात्मिक शरीर हमारे साथ है। उन्होंने ममत्व, प्रेम और आशीर्वाद की हम पर बौछार की। हमें अपनी माँ की कमी सदा रहेगी परन्तु मुझे यक़ीन है वह सदा हमारे अंग-संग रहेंगी और हमारा मार्गदर्शन करती रहेंगी...

मार्क और मधु हेंडरसन-बेग - ...इस समय आप सब हमारे ख़्यालों में हो... अपने अर्पणा परिवार के साथ बिताये समय की सुन्दर यादें... हमारे जीवन में छोटे माँ का महत्व...

मनु, राका, अर्जुन और नितिन महता - छोटे माँ के जाने के बाद हम सब एक अजीब सा खालीपन महसूस कर रहे हैं। हमने उनसे बहुत कुछ प्राप्त किया। उन्होंने बदले में कुछ भी उम्मीद किये बिना जीवन भर निःस्वार्थ प्रेम दिया। वह हमारे सभी के दिलों और विचारों में रहेंगी। ऐसे समय में सच ही दूरी का एहसास होता है। काश कि आज हम सब वहाँ आपके साथ होते...

नमन, मिथिला, विहान और महिका दयाल - छोटे माँ से हमें जीवन में निरन्तर प्रेरणा और बल मिला। आज मुझे मधुबन में बिताये अपने बचपन के वो दिन याद आ रहे हैं... सत्संग में हमें छोटे माँ ने बड़ी ही लग्न से नोट्स लेना सिखाया... मुझे याद आता है कि कैसे हमें मन्दिर में प्रश्न पूछने के लिए कहतीं और आत्मविश्लेषण करना भी बतातीं... कैसे हमें प्रतिस्पर्धी होने के लिए प्रोत्साहित करतीं (दोस्ताना तरीके से!)... कैसे हमें कहानियाँ सुना कर सीख देतीं... मैं यह सब अनुभव पाकर स्वयं को धन्य महसूस करता हूँ। छोटे माँ आत्मा रूप में एवं स्मृतियों में सदा हमारे साथ रहेंगे...

अनिल लाल - ... सच में आज हमने परिवार का एक और स्तम्भ खो दिया... जिन परिवार के जनों को वह पीछे छोड़ गई हैं उन सभी के लिए आशीर्वाद...

लुइक और मिनाक्षी फवे - १७ मई को, हम भी आपके साथ-साथ प्रार्थना करेंगे। छोटे माँ के प्रति हम अतीव आभारी हैं जिन्होंने न केवल हमें अध्यात्म सिखाया बल्कि जीवन में प्रोत्साहित भी किया। वह आध्यात्मिक रूप से अत्यधिक विकसित दुर्लभ व्यक्तियों में से एक थीं। हम भाग्यशाली हैं कि उन्हें जान पाये और हाँ! उन्होंने वास्तव में मानवता को बहुत कुछ दिया है...

सुशील और सविता आनन्द - ...एक और निकट सहयोगी इतिहास के पन्नों में शामिल हो गया... मैं यक़ीन के साथ कह सकता हूँ कि अन्ततः छोटे माँ परम पूज्य माँ को मिल कर बहुत खुश होंगे...

मोहिनी नून - ...छोटे माँ अब हमारे बीच नहीं रहे, यह सोच कर मुझे बहुत दुःख हो रहा है। वह सदैव ज्ञान एवं ख़ुशी का प्रकाश स्तम्भ रहीं। उनका साथ सदैव उत्थान की ओर ले जाता था। लगभग २० साल पहले, हमारे पहली बार मिलने के बाद से ही, मैंने उनके प्रति एक विशेष आकर्षण महसूस किया। मेरी माँ के लिए वह एक गुरु थीं। दिल्ली में उन्हें मिल पाना सदैव अच्छा लगता था। उनकी कमी हम दोनों को खलेगी। वह कभी-कभी मेरे पिता जी को भी देखने आती थीं और वह भी उनके लिए एक विशेष आदर रखते थे।

जीवन को जीने का ढंग हमने छोटे माँ से सीखा। परम पूज्य माँ के प्रति उनका भक्तिभाव, उर्वशी के प्रति उनका समर्पण एवं सभी को निष्काम प्रेम करते हुए उनका अपने आप को देना... उनके जीवन के उदाहरण से हम बहुत कुछ सीख पाये। वह अपने पीछे अपनी अच्छाई की महक छोड़ कर गई हैं...

रूप आनन्द - ... छोटे माँ एक महान हस्ती थीं... आशा और साहस का एक ऐसा प्रकाश स्तम्भ थीं, जिन्होंने अर्पणा के साथ-साथ बाहर से भी अनगिनत लोगों को जोड़े रखा...

डॉ. रघुनन्दन गैंद - रबीन्द्र नाथ टैगोर ने मृत्यु को इस तरह परिभाषित किया है :

"यह जीवन शमन नहीं है।
चिराग़ इसलिए बुझाया जा रहा है क्योंकि बाहर उजाला हो गया है।"

छोटे माँ करुणा की मूर्त थे। वह विचारशील, कोमल हृदयी, सौम्य एवं शान्त स्वभाव की थीं। उन्होंने हर परिस्थिति में समभाव बनाये रखा। इस प्रकार का समचित भाव कई वर्षों की तपस्या के बाद आता है। वह पूर्ण रूप से परम पूज्य माँ के प्रति समर्पित थीं जिनका उन्होंने प्रेम पूर्वक भक्ति के साथ सेवा की। हम उन्हें बहुत याद करेंगे। अर्पणा अस्पताल के डॉक्टरों एवं नर्सों ने उनका बहुत ख़्याल रखा, जिसके लिए हम कृतज्ञ हैं...

श्रीमती प्रेम कालरा - मेरे जीवन में पूज्य छोटे माँ प्यार की मूर्त बन कर आये!

वह ही मुझे परम पूज्य बड़े माँ के समीप लेकर आये। उन्हें 'माँ' कहूँ या 'भगवान' कहूँ, नहीं जानती! हाँ, इतना अवश्य है कि उन्होंने हाथ पकड़ कर यह सिखाया कि जीवन क्या है! उसे किस तरह से जीना है!

उन्होंने मेरा मार्गदर्शन किया। उनके आगे मैं सदैव नत्मस्तक हूँ। यही मेरी श्रद्धांजलि है!

श्रीमती प्रेम सरीन - छोटे माँ की मधुर मुसकान, मीठी वाणी, और प्रेम भरे प्रवचन हमारे जीवन का पाथेय हैं। पूज्य बड़े माँ की वाणी को कहीं प्रश्नोत्तर रूप में, कहीं भजन रूप में पहुँचाने वाली सेतु पूज्य छोटे माँ को हमारा शत-शत नमन और श्रद्धांजलि।

डॉ. बी. के. ठाकुर - इनका जीवन एक साध्वी एवं धार्मिक प्रचारक जैसा रहा। पूर्ण जीवन त्याग की मूर्ति बन कर रहीं। समाज में अपना नाम व काम कमाया। ईश्वर उनको मोक्ष दें।

ओ.पी. कालरा - पूज्य छोटे माँ द्वारा कई बार बोले जाने वाले शब्द "करे कराये आपो आप - सब कुछ उस ईश्वर के हाथ" हमें ईश्वर के प्रति समर्पण का संदेश देते हैं... जो हमारे लिए सदा पथ-प्रदर्शक रहेंगे और उनके कहे शब्द ईश्वर के प्रति हमारी आस्था को मज़बूत करते रहेंगे।

विनोद सोनी - ...क्योंकि हमारे हर रोज की दिनचर्या मन्दिर से ही शुरु होती है... छोटे माँ की मधुर व मीठी वाणी व उनके कहे अच्छे-अच्छे प्रवचन हमारे मन में सदा सदा रहेंगे ।

संदीप कुमार चौहान - पूज्य छोटे माँ द्वारा दूसरों के लिए समर्पित भाव सदैव प्रेरणादायक रहेगा। भगवान श्री राम जी से प्रार्थना है कि आपको मोक्ष प्राप्त हो!

श्रीमती लक्ष्मी - पूज्य छोटे माँ, आपने सब को एक बराबर समझा। जब से मैं अर्पणा अस्पताल में आई हूँ मैंने आप को अपनी माँ के रूप में देखा है। आप साक्षात देवी हो। आप की smile बहुत अच्छी लगती है। I miss you, छोटे माँ।

❖ ❖ ❖

परम पूज्य माँ के साथ पूज्य छोटे माँ

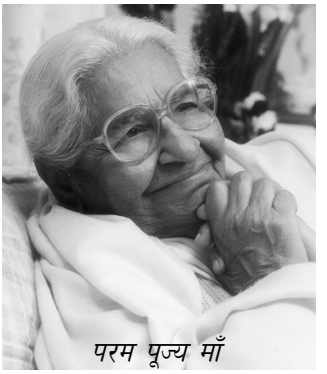

परम पूज्य माँ

अर्पणा
समाचार पत्र

अर्पणा ट्रस्ट, मधुबन,
करनाल, हरियाणा
जून २०१५

वह अपने सद्गुरु में समा गये...

...और अब, वह, पूज्य छोटे माँ, जिनका सारा जीवन अपने सर्वस्व, अपने दिव्य सद्गुरु परम पूज्य माँ के प्रति समर्पित रहा... के साथ आत्मा में जा विलीन हो गये हैं। हम जब भी परम पूज्य माँ के दिव्य प्रवाह 'उर्वशी' को पढ़ेंगे, हम पूज्य छोटे माँ के आजीवन ऋणी रहेंगे। अपने इष्ट राम जी के ध्यान में निमग्न परम पूज्य माँ के स्वत स्फुरित दिव्य प्रवाह को छोटे माँ बड़ी निष्ठापूर्वक लेखनीबद्ध करते जाते... जो कि भावी पीढ़ियों के लिए एक अमूल्य निधि है।

१७ मई को, मधुबन में, पूज्य छोटे माँ को श्रद्धांजलि देने के लिए अर्पणा परिवार, स्टाफ़ के लोग, श्रद्धालु जन एवं मित्रगण एकत्रित हुए और सभी उनके जीवन के प्रयोजन के प्रति प्रतिबद्ध हुए... उर्वशी एवं शास्त्रों का प्रचार एवं प्रसार। सभी ने मिलकर पूज्य माँ और पूज्य छोटे माँ की विरासत के लिए प्रतिबद्धता का संकल्प लिया।

उर्वशी समारोह

९ मार्च को साधना दिवस एवं १६ अप्रैल को समाधि दिवस के उपलक्ष्य में मधुबन के मन्दिर में जालंधर, चण्डीगढ़ एवं दिल्ली से अर्पणा परिवार एवं मित्रगण एकत्रित हुए और कृतज्ञ हृदयों के साथ (कुछ ने नम आँखों के साथ) सभी ने अपनी दिव्य माँ को याद किया जिनके वाक् एवं जीवन ने सब के जीवनों पर अमिट छाप छोड़ी है और जो आज भी उनका मार्गदर्शन कर रहे हैं।

दिल्ली - विभिन्न दिशाओं में

अर्पणा के छात्र कॉलेज गये

१२वीं कक्षा के ३४ छात्रों में से १४ छात्र नियमित रूप से कॉलेज जा रहे हैं और २० अन्य छात्र दिल्ली विश्वविद्यालय के डिस्टैन्स लर्निंग प्रोग्राम के अन्तर्गत स्नातक स्तर की पढ़ाई कर रहे हैं।

१२वीं कक्षा से उतीर्ण होकर जाने वाले छात्रों ने आने वाले १२वीं कक्षा के छात्रों को अपने विदाई उपहार के रूप में 'पेंट' (रंग रोगन) दिया जिससे नई १२वीं कक्षा के लड़कों ने ख़ुशी ख़ुशी स्वयं अपनी नयी कक्षा का कमरा पेंट कर लिया।

अर्जुन (पिछले वर्ष का १२वीं का छात्र) : "अर्पणा की मदद से, मैं सेठ जयप्रकाश पॉलिटैकनिक से नाममात्र शुल्क देकर कम्प्युटर इन्जिनियरिंग कर रहा हूँ। जिस दिन से मैंने कॉलेज जॉइन किया है मेरा जीवन ख़ुशियों से भर गया है। शीघ्र ही मैं अपने परिवार की आर्थिक रूप से सहायता कर पाऊँगा।"

एन आई आई टी के परिणाम

एन आई आई टी फाउंडेशन के कम्प्यूटर सर्टिफिकेट कोर्स से उतीर्ण होने वाले २२ छात्रों में से १४ को 80% से ऊपर एवं ३ को 90% से ऊपर अंक प्राप्त हुए। उनके प्रतिष्ठित प्रमाण पत्र उन्हें नौकरियाँ उपलब्ध करवाने में सहायक सिद्ध होंगे।

नई पुस्तकें : फरवरी में विश्व पुस्तक मेले में से अर्पणा लाइब्रेरी के लिए १२० पुस्तकें ख़रीदी गईं जिन्हें पाकर मोलरबन्द के छात्रों की ख़ुशी का कोई ठिकाना नहीं रहा।

अर्पणा के शिक्षण कार्यक्रमों में सहायता देने के लिए एस्सेल अवीवा प्रा.लि., केयरिंग हैण्ड्ज़ फॉर चिल्ड्रन एवं अन्य उदार दाताओं के प्रति हम अति कृतज्ञ हैं।

अर्पणा अस्पताल

नेत्र शिविरों के लिए सी बी एम के साथ पहले से चल रही भागीदारी

मधुमेह रेटिनोपैथी के शिविरों का अर्पणा अस्पताल द्वारा ८ गाँवों में आयोजन किया गया जहाँ ९०३ रोगियों के नेत्रों की जाँच की गई। उनके दृष्टिदोष को समाप्त करने के लिए आवश्यकता अनुसार सर्जरी भी की गई।

बालचिकित्सा शिविरों का भी अर्पणा अस्पताल द्वारा ८ गाँवों में आयोजन किया गया और यहाँ ९६९ छात्रों के नेत्रों की जाँच की गई।

डायलिसिस मशीन : बैजनाथ भण्डारी पब्लिक चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा दी गई डायलिसिस मशीन को अर्पणा अस्पताल में स्थापित किया गया। यह अर्पणा अस्पताल की वर्तमान प्राप्त सेवाओं में एक बड़ी उपलब्धि है।

स्त्री रोग की नई ओ पी डी : अर्पणा अस्पताल में एक और नई ओ पी डी की स्थापना हुई जिससे संख्या में बढ़ते हुए रोगियों की बेहतर देखभाल हो सके।

सी बी एम के साथ साथ बैजनाथ भण्डारी पब्लिक चैरिटेबल ट्रस्ट, नई दिल्ली का उपकरण देने एवं ग़रीब रोगियों की सहायता करने के लिए हार्दिक धन्यवाद!

हरियाणा में सेवाओं का विस्तार

विकलांग लोगों को सशक्त किया

करनाल में अधिकारियों के साथ मिटिंग : ८ विकलांग लोगों के संगठनों में से, १४ लोग ज़िला समाज कल्याण कार्यालय एवं विकलांग लोगों की शिक्षा के कार्यालय गये। वे 'मुख्यमंत्री की खिड़की' पर भी गये, जहाँ कोई भी नागरिक अपनी किसी भी समस्या के लिए आवेदन प्रस्तुत कर सकता है।

विकलांग लोगों के नेताओं की कार्यशाला : अर्पणा में, दिल्ली स्थित NGO, ASK द्वारा आयोजित २ दिन की प्रशिक्षण कार्यशाला में २० महिलाओं में से ५ विकलांग महिला नेताओं को सम्मिलित किया गया। इन महिलाओं को प्रशिक्षण सत्र का प्रभावी रूप से संचालन करना सिखाया गया। उन्होंने स्वच्छता, शौचालयों के निर्माण और अपशिष्ट पुनर्चक्रण को प्रोत्साहित करने के लिए सफ़ाई पर एक नाटक की पटकथा लिखी। इन गतिविधियों द्वारा उन में आत्मविश्वास की भावना को प्रबलता मिली।

विकलांग व्यक्तियों के लिए आयोजित एक कार्यक्रम

१५ अप्रैल को अर्पणा ट्रस्ट हाऊस मधुबन में ८० लोग एकत्रित हुए जहाँ अर्पणा चिकित्सा सेवाओं की निर्देशक, डॉ. इला आनन्द की अध्यक्षता में सहायक उपकरणों और तिपहिया साइकिलों को गाँवों से आये ९ विकलांग व्यक्तियों में वितरित किया गया।

३२ वर्षिय नरेश जन्म से ही चल पाने में असमर्थ था। उसने केवल दूसरी कक्षा तक ही पढ़ाई करी। उसके २ बच्चे हैं और परिवार की आजीविका के लिए एक एकड़ भूमि है। उसे प्रदान की गई तिपहिया साइकिल के द्वारा गतिशील हो पाने से वह बहुत आभारी है।

जीतो को बचपन में ही पोलियो हो गया था जिससे वह घर तक ही सीमित रह गई थी। वह अब अपने तिपहिया साइकिल की सहायता से समूह की मीटिंग में भी शामिल हो पायेगी।

अर्पणा ने विशेष मानसिकता वाले १२ वर्षीय सुनील को एक विशेष स्कूल में जाने की सहायता की। वह अपनी तिपहिया साइकिल से बहुत ख़ुश है।

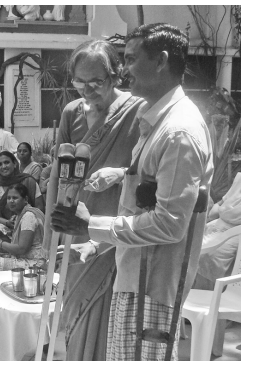

संघ के अध्यक्ष, श्री शो सिंह ने बताया कि अर्पणा द्वारा निःशक्तजन के जीवन में कैसे परिवर्तन लाया जा रहा है।

अर्पणा, स्वास्थ्य एवं हरियाणा में विकास के कार्यक्रमों के लिए सी बी एम इंडिया, टाईड्ज़ फाउंडेशन, गिव टू एशिया एवं बैजनाथ भण्डारी पब्लिक चैरिटेबल ट्रस्ट, भारत, का अत्यन्त आभारी है।

उदय हो रहा... हिमाचल

गजनोई किसान उत्पादक सहकारी सोसायटी

१४ मार्च को अर्पणा के स्वयं सहायता समूहों के सदस्यों एवं किसान क्लबों ने 'गजनोई किसान उत्पादक सहकारी सोसायटी लिमिटेड' की स्थापना की। ५४ महिलाओं एवं पुरुषों ने सदस्यों के रूप में स्वयं को पंजीकृत करवा कर प्रत्येक ने ५००/- रुपये से अपना-अपना योगदान दिया। इससे विपणन और नई जानकारी प्राप्त करने में सहायता मिलेगी।

पारिस्थितिकी पर्यटन (Eco Tourism) : अर्पणा विकास सेवाओं की निर्देशक, श्रीमती अरुणा दयाल द्वारा पर्यटक गाइड के लिए आवश्यकता सहित पारिस्थितिकी पर्यटन एवं स्थानीय घरों में पर्यटकों के लिए कमरे उपलब्ध करवाने इत्यादि के विषय में चर्चा करने के लिए २२ अप्रैल को अर्पणा के युवा समूहों की एक बैठक का आयोजन किया गया।

अर्पणा के इस नये कार्यक्रम के अन्तर्गत इन आय सृजन के अवसरों का प्रशिक्षण देने के लिए सभी ने बड़े उत्साह के साथ स्वागत किया।

किसानों को नई शिक्षा के लिए दौरा : १६-१७ मार्च को अर्पणा के किसानों क्लबों के २० सदस्यों द्वारा नाबार्ड के अन्तर्गत कृषि विज्ञान केन्द्र, सरु (चम्बा) का दौरा किया गया। अर्पणा के किसान सदस्य जो कभी प्रति वर्ष १०,०००/- रुपये से भी कम में जीवन वहन करते थे अब इस प्रकार के दौरों से जानकारी प्राप्त करके २,५०,०००/- रुपये तक सालाना कमा पाते हैं।

निःशुल्क चिकित्सा शिविर : १२ अप्रैल को नाबार्ड द्वारा प्रायोजित कोलका गाँव में यह शिविर आयोजित किया गया। डॉक्टर ने दूरदराज़ के गाँवों से ११२ रोगियों की जाँच की जिनमें से अधिकतर चम्बा के सरकारी अस्पताल तक पहुँचने में सक्षम नहीं थे।

हिमाचल प्रदेश में स्वास्थ्य एवं विकास कार्यक्रमों में सहयोग देने के लिए बैजनाथ भण्डारी पब्लिक चैरिटेबल ट्रस्ट, टाइड्ज़ फाउंडेशन एवं गिव टू एशिया के हम अति कृतज्ञ हैं।

We, at Arpana, depend on your support for our programs

Arpana Trust and Arpana Research & Charities Trust are both approved under Section 80G of the Income Tax Act, 1961, giving 50% tax relief for donors in India.

FCRA Registration No. for Arpana Trust is 172310001.

FCRA Registration No. for Arpana Research & Charities Trust is 172310002.

Send your contribution for dissemination of humane values & medical and community welfare services in

Delhi to: Arpana Trust, Madhuban, Karnal, Haryana 132 037

Send your contributions for health & development services in Haryana & Himachal to:

Arpana Research & Charities Trust, Madhuban, Karnal, Haryana 132 037

Arpana Hospital: 91-184-2380801, Info & Resources Office: 91-184-2390905

emails: at@arpana.org and arct@arpana.org

Please let us know by email or telephone, whenever you transfer funds to Arpana.

Mrs. Aruna Dayal, Director Development Mobile +91-9896242779, +91-9873015108

Websites: www.arpana.org www.arpanaservices.org